पुलकित हृदय
प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

'जिज्ञासु' भजन-संग्रह

रक्तसाक्षी पं० लेखराम बलिदान शताब्दी पुस्तकमाला—६

पुलकित-हृदय

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशक

मुनिवर गुरुदत्त संस्थान

हिण्डौन सिटी, राजस्थान-३२२२३०

प्रकाशक : मुनिवर गुरुदत्त संस्थान
सम्पर्क—आर्य स्टोर, कटरा बाजार,
हिण्डौन सिटी (राज०) ३२२ २३०

प्रथम संस्करण : पं० लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह
हिण्डौन सिटी, राजस्थान
९ फ़र्वरी १९९७

मूल्य : पच्चीस रुपये

लेज़रटाइपसैटिंग : भगवती लेज़र प्रिंट्स
वेद-मन्दिर, इब्राहिमपुर, दिल्ली-३६

मुद्रक : राधा प्रेस
कैलाश नगर, दिल्ली-'

समर्पण

जिन्होंने मुझे सामाजिक व साहित्यिक जीवन में अपार प्यार दिया, प्रोत्साहन दिया, मुझपर आशीर्वादों की वर्षा करते रहे।

और

रक्तसाक्षी पं० लेखराम, आचार्य चमूपति, महाकवि शङ्कर, श्री त्रिलोकचन्द 'महरूम', कविरत्न 'प्रकाश' आदि साहित्यकार जिनसे मुझे गीत लिखने की प्रेरणा प्राप्त होती रही।

तथा

लेखरामनगर (कादियाँ) के आर्य युवक समाज के उत्साही युवक जो मेरे आरम्भिक काल में झूम-झूमकर मेरे रचे भजनों को गाते रहे।

एवं

उन सब धर्मप्रेमियों को जिन्होंने देश-विदेश में मेरे गीतों को प्रचारित किया व अपनाया। मैं उन सबको कृतज्ञता, प्यार व सत्कार से अपना यह नूतन गीत-संग्रह समर्पित करता हूँ।

—राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

क्रम
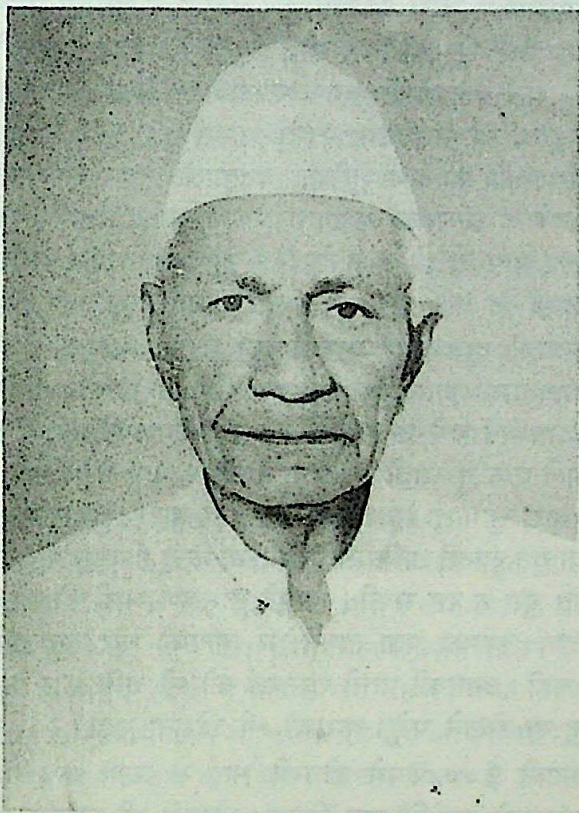
स्व० श्री शिवगुण बापूजी

श्री शिवगुण बापूजी

गुजरात के भुज कच्छ क्षेत्र में लुडवा ग्राम में एक कृषक पटेल परिवार में जन्मे श्री शिवगुण बापूजी ने दीर्घायु प्राप्त करके २१.१.९६ को भुज में प्राण छोड़े। मृत्यु के समय आपकी आयु ९४-९५ वर्ष की होगी। आप बाल्यकाल में ही पितृविहीन हो गये। बहुत निर्धनता देखी, परन्तु अपनी कुशाग्र बुद्धि, परिश्रम, ईश्वर विश्वास व अर्थ शुचिता के दृढ़व्रत के कारण जीवन में मान, ज्ञान व सम्पन्नता सबकुछ प्राप्त किया। आपके पूर्वजों में एक वेला बापा ने गो-रक्षा के लिए बलिदान देकर अमर कीर्ति पाई। उन्हीं के नाम पर यह कुल वेलाणी कहलाता है।

आपको लुडवा के एक सज्जन खेतसी भाई ने एक ईरानी मुसलमान द्वारा चलाए गये सत्पन्थ की दीक्षा दिलवा दी। कराची में कुछ कमाने गये तो महर्षि दयानन्द के उपदेशामृत का पान करनेवाले एक गुजराती सुधारक नारायण भाई से वैदिक धर्म के बारे में कुछ सुना तो सत्पन्थ के जाल से बाहर निकल गए, परन्तु यह बात गुप्त रक्खी ताकि सत्पन्थी भ्रष्ट हिन्दू ही तङ्ग न करें, परन्तु यह बात गुप्त न रह सकी। आपने नारायण भाई को पाँच रुपये दान दिया। इसका पता लगने पर आपको घोर यातनाएँ सहन करनी पड़ीं। आपकी पत्नी रामबाई को भी बहिष्कार के कारण बहुत दुःख झेलने पड़े। कराची भी छोड़ना पड़ा।

आपने ३०० रुपये खेतसी भाई से ऋण रूप में लेकर अफ्रीका जाने का निश्चय किया। खेतसी भी लुडवा आ गया था और इन्हें वैदिक धर्म ग्रहण करने की प्रेरणा दी। इन्होंने कहा— "चल रे चल! पहले मुझे सत्पन्थ में फँसाया और अब वैदिक धर्मी बनाने आया है।" आप अफ्रीका के लिए जिस जलयान में बैठे उसी में खेतसी भाई भी टिकट लेकर सवार हो गया। दोनों नैरोबी पहुँचे। खेतसी भाई ने सुन रक्खा था कि नैरोबी में आर्यसमाज है। वह सायङ्काल घूमने के लिए अकेला निकला।

अगले दिन रविवार शिवगुणजी को कहा चलो कहीं घूम आएँ। वह इन्हें एक सत्सङ्ग में ले गया। वहाँ एक सज्जन ने बहुत मधुर भजन गाते हुए धर्म-चर्चा की जिसे सुनकर शिवगुण झूम उठे। इन्हें बाद में पता चला कि यह आर्यसमाज है। भजन गानेवाले का नाम पं० बद्रीनाथ था। वह रेलवे में एक उच्च पद पर थे।

खेतसी भाई घर लौटने लगे तो शिवगुणजी ने कहा, मुझे कुछ कमा तो लेने दें ताकि ऋण चुका दूँ। उसने कहा, मेरे रुपये प्राप्त हो गए। मैं तो तुम्हें आर्य मन्दिर दिखाने के प्रयोजन से ही यहाँ आया था। यह है आपके हृदय परिवर्तन की कहानी। यह कहानी कितनी विचित्र है यह पाठक स्वयं ही निर्णय करें।

आर्यसमाज नैरोबी में स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज व एक वानप्रस्थी विद्वान् के उपदेशों को सुनकर आप दृढ़ वैदिक धर्मी बन गए। देश विभाजन से पूर्व कराची में पं० चमूपतिजी, महात्मा नारायण स्वामीजी आदि महापुरुषों के व्याख्यान प्रवचन सुने। सिन्ध में आपके आर्य मित्र नाथूराम को जब कोर्ट में शहीद किया गया तब आप उनके साथ जुड़कर बैठे थे।

आपने सारा जीवन गो-पालन, गो-दूध व गो-घृत आदि का प्रचार किया। आपका गो-विषयक चिन्तन बहुत मौलिक था। आपके रोम-रोम में वेद, ईश्वर व महर्षि दयानन्द के प्रति भक्ति थी। यज्ञ हवन का आप जैसा प्रेमी मिलना अति कठिन है। आपके पुरुषार्थ से अनेक लोगों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। आज लुडवा के पटेल सारे आर्यजगत में चमक रहे हैं। आपने यज्ञ-हवन का, शिक्षा का व गो-दूध का जितना प्रचार किया है उसकी पाठक कल्पना नहीं कर सकते। इसे वही जानते हैं जो आपके सम्पर्क में आए। आपके परिवार में नित्य सन्ध्या हवन होता है। आपकी चौथी पीढ़ी वैदिक धर्म की सेवा में आगे आ रही है।

दीन के लिए, दलित के लिए आपके मन में करुणा का भाव लहरें लेता था। बड़े सत्यवादी, विनम्र, सरल व निरभिमानी थे। मृत्यु के समय कहा—''जहाँ ऋग्वेद का यज्ञ है मुझे वहाँ ले चलो।'' परिवार ने आशीर्वाद माँगा तो कहा—''सारे

भारतवासियों को हमारा आशीर्वाद।'' ऋचाओं का श्रवण करते हुए ओ३म् का जप करते हुए वे २१ जनवरी ९६ को नश्वर देह का त्याग कर गए। आपके तीन सुपुत्र श्रीवेलजी भाई, श्री विश्राम भाई व श्री नारायण भाई आर्यसमाज की सेवा में लगे रहते हैं। उनकी स्मृति में **पुलकित-हृदय** गीत संग्रह प्रकाशित करने का सङ्कल्प श्री विश्राम भाईजी ने किया। उनके दोनों बड़े पुत्रों श्री दिलीपजी और श्री कीर्ति ने भी सहर्ष इस कार्य को पूरा करने का निश्चय किया। श्री शिवगुण बापू के जीवन की एक-एक घटना प्रेरणाप्रद है। उस निर्मल जीवन से लोग चिरकाल तक प्रेरणा पाते रहेंगे। गुजरात का आर्यवन विकास फार्म उन्हीं के कुटुम्बियों की देन है।

—राजेन्द्र '**जिज्ञासु**'

प्रकाशकीय

सुख-दुःख अनुभूतिजन्य हैं। एक-सी परिस्थिति में एक व्यक्ति सुख अनुभव कर रहा है और दूसरा दुःख। एक स्थिति यह भी है कि व्यक्ति परिस्थिति में रहकर भी उससे अछूता रहता है। तीनों ही भावनाएँ अपना पृथक् परिणाम सामने लाती हैं। उत्तम और निकृष्ट परिस्थिति के प्रकार पर निर्भर करता है। भौतिक कठिनाइयों में दुःख अनुभव करना निश्चय ही कष्टदायक है और सुख अनुभव करना अथवा अनासक्त रहना एक प्रकार की प्रसन्नता को जन्म देता है।

दूसरी स्थिति यह है कि सामाजिक बुराइयों अथवा राष्ट्रीय सङ्कट की स्थितियों में जो व्यक्ति सुखी होता है वह निश्चय ही निकृष्ट है और एक समय आता है जब यह सुख भी दुखदाई हो जाता है। ऐसी स्थितियों में अनासक्ति का भाव भी उत्तम नहीं कहा जा सकता। जो व्यक्ति ऐसी स्थितियों में दुःखी होता है वही कुछ करता है और यही उत्तम और आदर्श है। ऐसा व्यक्ति मानवीय संवेदनाओं का पुञ्ज होता है और इसका जीवन ही सफल होता है।

मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जब शब्दों के द्वारा होती है तो व्यक्ति लेखक, सुधारक, कार्यकर्त्ता बन जाता है और यही अभिव्यक्ति जब अन्तर को तरङ्गित करने वाले, गुनगुनाने वाले शब्दों में होती है तो व्यक्ति कवि बन जाता है। व्यक्ति के आसपास की सूक्ष्मतर घटना उसे उद्वेलित करती है जिसके सुसम्पादन के लिए शब्द निर्झर बन बह निकलते हैं। यह शीतलता भी प्रदान करते हैं तो तन-मन में अग्नि का सञ्चरण भी कर देते हैं। यह स्थिति क्या है? भावनात्मक ही तो है। न तो शब्दों से भौतिक जल टपकता है और न ही अग्नि जलती है।

प्रस्तुत सङ्कलन के लेखक माननीय श्री राजेन्द्रजी जिज्ञासु ऐसी ही मानवीय भावनाओं के पुञ्ज हैं। आपने अन्याय, अत्याचार

के विरुद्ध जहाँ अमानवीयता की सीमा तक कष्ट उठाए हैं वहीं शब्दों द्वारा जन-जन को उद्वेलित व प्रेरित किया है। एक कर्मठ व आदर्श कवि मन की अभिव्यक्ति इस सङ्कलन में हुई है। स्वयम् मुझे इसे पढ़कर यह ज्ञात हुआ कि बहुत से भजन और गीत जो जन-जन की जिह्वा पर चढ़े हुए हैं लेकिन गाने वालों को लेखक का नाम पता नहीं। यह भावना उन लोगों के लिए कितना सटीक उत्तर है जो यह कहकर जिज्ञासुजी की आलोचना करते हैं कि जिनके यहाँ रोटी खाते हैं उन्हीं की आलोचना करते हैं। ऐसे निस्पृह व्यक्ति को किसी से क्या स्वार्थ हो सकता है। धन, मान और पद की चाह न रखकर जो कार्य करता हो उसे क्या लालच हो सकता है। क्या देव दयानन्द की आलोचना इसलिए की जानी चाहिए कि उन्होंने जिनके यहाँ भोजन किया उन्हीं के सुधार के लिए कार्य किया जिससे उनको कष्ट हुआ। वस्तुत: यह गर्व का विषय है कि वर्त्तमान में जहाँ सिद्धान्तनिष्ठता का स्थान स्वार्थनिष्ठता ले रही है वहाँ आर्यसमाज में ऐसे जीवट के लोग कार्यरत हैं।

अमर हुतात्मा पं० लेखराम के शताब्दी वर्ष में यह सङ्कलन प्रकाशित कर मुनिवर गुरुदत्त संस्थान ने जहाँ सद्भावनाओं के जीवन्त बने रखने में योगदान किया है वहीं उदास, निराश, हताश तथा प्रफुल्लित, उत्साहित जनों को गुनगुनाकर ऊर्जायुक्त करने का कार्य किया है। आपके स्नेह ने निरन्तर हमारा उत्साह बढ़ाया है और भविष्य में भी हम आदर्श साहित्य देते रह सकेंगे, इसी कामना के साथ—

—प्रभाकरदेव आर्य

प्राक्कथन

मैंने पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के अभिनन्दन समारोह के लिए एक गीत रचा—'क्यों मौत की चिन्ता करूँ'? अजमेर में श्री महाराज के अभिनन्दन समारोह का आरम्भ इसी गीत से हुआ था। ब्र० जितेन्द्रजी ने श्रद्धा में डुबकी लगाते हुए इस गीत को ऐसे अनूठे ढङ्ग से गाया कि श्रोता भाव विभोर होकर झूम उठे। तब अनेक आर्य पुरुषों ने यह आग्रह किया कि मेरे गीतों का एक बृहत् नवीन संग्रह प्रकाशित होना चाहिये। कई ऋषि-भक्तों ने प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिये भी कहा परन्तु मैंने किसी से भी आर्थिक सहयोग लेना उचित न समझा। सबको यही कहा कि संग्रह छप जायेगा। अगला प्रश्न होता था, कब प्रकाशित होगा? मैं यही कहता रहा, कुछ प्रतीक्षा कीजिये।

तभी एक नया दबाव पड़ने लगा कि यह नवीन संग्रह मुनिवर गुरुदत्त संस्थान को प्रकाशनार्थ दें। मैं संस्थान को इसके लिए भी कैसे आग्रह कर सकता हूँ। संस्थान के पास कई योजनाएँ हैं। मेरे ही द्वारा अनूदित, संग्रहीत व सम्पादित आचार्य चमूपतिजी की विचार-वाटिका के अभी कई खण्ड छपने हैं। संस्थान के साधन सीमित हैं। धर्म प्रेमियों के इस स्नेह को पाकर मुझे बहुत संतोष हुआ। परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्दजी आर्य ने भी 'क्यों मौत की चिन्ता करुँ?' पर ब्र० जितेन्द्रजी को सम्मानित किया और इसे छपवाने की बात कही।

प्रियवर श्री दिलीपजी ने कहा इस गीत सहित आपका नवीन संग्रह छपवाने के लिये मैं अपने पूज्य पिताजी व छोटे भाई कीर्ति की ओर से ५१००/- रुपये दूँगा। मेरे पूज्य दादाजी के नाम पर मुनिवर गुरुदत्त संस्थान से यह कार्य होना चाहिए। मेरे न-न करने पर भी वह अपनी बात पर अड़े रहे। मुझे पता था कि अब यदि मैं अपनी बात पर अड़ा रहा तो दिलीपजी सीधा श्री प्रभाकरदेवजी आर्य से बात करेगें फिर भी तो संग्रह तैयार करना पड़ेगा। सो मैंने हाँ कर दी। यह है संक्षेप से 'पुलकित-हृदय' इस नवीन भजन संग्रह के प्रकाशन की कहानी।

इतना दु:ख अवश्य है कि श्री शिवगुण बापूजी के जीवन-काल में मैं इसे तैयार न कर सका। वह तो पका हुआ खरबूज़ थे। स्वतः ही सहज रीति से बेल को छोड़कर चल दिये। हाँ! यह हर्ष का विषय

है कि रक्तसाक्षी पं० लेखराम बलिदान शताब्दी महापर्व पुस्तकमाला के अन्तर्गत संस्थान को एक नया पुष्प भेंट करने का अवसर प्राप्त हो गया।

मुझे यह मानने में तनिक भी सङ्कोच नहीं कि मुझे छन्दशास्त्र का ज्ञान नहीं, तथापि मैं पद्य रचना करता हूँ। मैं जो कुछ भी लिखता हूँ अनुभूति से लिखता हूँ। बाल्यकाल में ही तुकबन्दी करने लग गया। कॉलेज में पढ़ता था तो कुछ और आगे बढ़ा। अधिक लिखने लगा। चालीस वर्षों से मेरी रचनाएँ आर्य सामाजिक पत्रों में प्रकाशित हो रही हैं। मेरा प्रथम भजन संग्रह १९५७ में छपा था। आर्यसमाज में अधिकांश भजन पुस्तकों में मेरे भजन छपते रहते हैं। मैं अपनी रचनाओं में 'जिज्ञासु' उपनाम कम ही देता हूँ, अतः सभी पाठक नहीं जानते कि मेरी रचना कौन-कौन सी है।

अपने निधन से पूर्व श्रीमान् महात्मा प्रेमभिक्षुजी मथुरा ने एक बृहद् भजन संग्रह छपवाया। उसकी भूमिका में विशेषरूप से यह लिखा कि इस संग्रह में कविरत्न प्रकाशजी के व मेरे भजन विशेषरूप से लिये गये हैं। मेरे गीतों को विशेषरूप से लेने का यह कारण दिया कि इनमें उद्बोधन है—इनसे विशेष प्रेरणा प्राप्त होती है। ईश्वर को कैसे धन्यवाद दूँ कि एक साधारण ग्रामीण, सत्ता व सम्पत्ति के खेल से दूर रहनेवाले इस सेवक की रचनाओं का ऐसा मूल्याङ्कन किया गया है। जब लिखना आरम्भ किया था तब कभी सोचा ही नहीं था कि एक दिन मेरी रचनाओं का इतना स्वागत होगा। देश-विदेश में मेरे गीत गूँज रहे हैं।

'हम रुकना झुकना क्या जानें' सब आर्यवीरों को कण्ठ है। 'जग को जगानेवाला आर्यसमाज है' सारे आर्यजगत् में गाया जाता है।

'जीवन दीप बुझाकर किसने जग को जगमग कर डाला' यह गीत श्री प्रदीप जैसे जाने-माने गायक की ऋषिगाथा कैसेट में भरा है। जीवन में कहाँ-कहाँ फिसला, गिरा व विफल हुआ यह मैं जानता हूँ या सर्वज्ञ प्रभु जानते हैं, तथापि प्रतापी लेखराम के प्रताप व प्रेरणाओं से भरपूर जीवन का यह फल है कि मैं साहित्य में नये-नये कीर्तिमान स्थापित कर पाया। आर्यसमाज के इतिहास में मेरे द्वारा लिखी गई मुनिवर गुरुदत्तजी की एक जीवनी के प्रथम संस्करण की बीस सहस्र प्रतियाँ प्रकाशित हुईं। यह भी एक नया कीर्तिमान

था। स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से यह समाचार पाकर मैं स्वयं ही चकित रह गया था। इसका श्रेय आर्यसमाज की महान् विभूतियों को जाता है या फिर मेरे पूज्य पिता श्री जीवनमलजी को। इस प्राक्कथन को समाप्त करते हुए यदि मैं प्राचार्य रमेशचन्द्रजी 'जीवन' को धन्यवाद न दूँ तो यह मुझे अखरेगा। उनकी विशेष प्रेरणा से लेखरामनगर (कादियाँ) में रचे गए कई पुराने भजन दिये हैं। मेरी रचनाओं में कई दोष होंगे, धर्मप्रेमी मेरी दुर्बलताओं व न्यूनताओं की उपेक्षा करते हुए जो ग्राह्य है, उसे ग्रहण करके अपने प्यार का परिचय देंगे।

यह परमदेव परमेश्वर की असीम कृपा का ही फल है कि अपने ३७ वर्ष के अध्यापन काल में मैं बहुत कुछ कर पाने में सफल रहा। प्राध्यापक के रूप में एक विशेष स्थान बनाया। नाम पाया परन्तु मैंने तब भी अपनी वैदिक विचारधारा को ही मुख्य रक्खा। डी०ए०वी० या आर्यसमाज के नाम पर चलाई जा रही संस्थाओं में कार्यरत रहा। इन संस्थाओं के अनार्य वातावरण में भय व प्रलोभन मुझे लक्ष्य से च्युत् न कर पाए। आज देहली से लेकर अटारी पठानकोट तक मैं किसी स्कूल कॉलेज की कमेटी में नहीं हूँ। जिनका आर्यसमाज व शिक्षाक्षेत्र से भी कोई लेना-देना नहीं था वे लोग इन 'दूकानों' के सञ्चालक मालिक बने बैठे हैं। श्री अश्विनीकुमार वकील जालन्धर जैसे लोग इसका उदाहरण हैं। यह पतन नहीं तो क़्या है? मैं तो यह सबकुछ देखकर भी लक्ष्य-सिद्धि में लगा हूँ। पं० लेखराम का पावन चरित्र मुझे सदा उभारता रहेगा। ईश्वर से मेरी सदा यह याचना रही हैं—

'लेखराम सी सदा धधकती मेरे उर में आग रहे।'

वरुण करुण मेरी यह पुकार अवश्य सुनेंगे। जीवन के अन्तिम श्वास तक ऋषि-मिशन की सेवा में प्रमाद नहीं करूँगा।

१९-५-१९९६

विनीत

—राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

कविता कुञ्ज/वेद सदन

अबोहर-१५२११६

लेखराम सी सदा धधकती

ज्ञान गुणों से सुरभित ईश्वर, रहे वाटिका जीवन की।
पवन प्रेम की पावन भगवन् शोभा हो इस उपवन की॥
अन्यायी का पोषक बनकर, अपयश ईश्वर पाऊँ न...
वैदिक पथ पर चलते-चलते अमर कीर्ति पाऊँ मैं।
विनय वीरता से जगती के पीड़ा ताप मिटाऊँ मैं॥
किसी झमेले में पड़कर के ध्येय धाम विसराऊँ न...
मन हो मेरा वश में मेरे, श्रद्धा से भरपूर रहे।
पाप भावना कदाचार की, मुझसे कोसों दूर रहे॥
जड़ को चेतन देव समझकर, मस्तक कभी झुकाऊँ न...
राग द्वेष से रहूँ अछूता, मन में यह अनुराग रहे।
लेखराम-सी सदा धधकती, उर में मेरे आग रहे॥
पद का भूखा बनकर हानि जाति को पहुँचाऊँ न...

सागर को ऊपर ले जाकर

हे संसार रचाने वाले। सूरज को चमकाने वाले॥
सागर को ऊपर ले जाकर। वर्षा को वर्षाने वाले॥
तीखे-तीखे काँटों के संग। कोमल पुष्प खिलाने वाले॥
यथा योग्य कर्मों का फल दे। अपनी दया दिखाने वाले॥
दया तुम्हारी न्याय तेरा। या विधि जगत् चलाने वाले॥
घन गर्जन में कौतुक तेरा। बिजली को दमकाने वाले॥
तेरी महिमा का क्या कहना। मीठी पवन चलाने वाले॥
हर प्राणी दूजे से न्यारा। अद्भुत कला दिखाने वाले॥
इस जग में जीना सिखलादो। मात-पिता कहलाने वाले॥
हर सङ्कट में धीरज़ देना। दीनानाथ कहाने वाले॥
विपदाओं में मन न डोले। प्रीतम साथ निभाने वाले॥
दुर्बलताएँ दूर भगा दो। दुर्गुण सकल छुड़ाने वाले॥

तेरा निशान प्यारा

सारा जहान प्यारे, तेरा निशान प्यारा।
माता पिता सखा तू बन्धु भी तू हमारा॥

हैरान कर रही है रचना तुम्हारी न्यारी।
प्यारी कला तुम्हारी, यह देव सृष्टि सारी॥
देती पता तुम्हारा, झरनों की देव धारा...

नालों का साफ़ पानी, ऊधम मचा रहा है।
शक्ति तुम्हीं से पाकर, पत्थर बहा रहा है॥
वायु में वेग तेरा, बल जल में है तुम्हारा...

आकाश का पड़ोसी पर्वत शिखर सुहाना।
नदियों का नाद दैवी कल-कल वह जल तरांना॥
गा गीत मीत तुझको लहरों ने है पुकारा...

भू पर विभु बिछाया यह घास का बिछौना।
वन को बनाया तूने ईश्वर अजब खिलौना॥
हिम आ रही गिरी से यह देखने नजारा...

जड़ में यह चेतना का फूँका है प्राण तू ने।
इन कूदते जलों में डाली है जान तू ने॥
भानु की रश्मियों में तेरा है तेज सारा...

उपासक बना लो

सुधा प्रेम की हे सुधाकर पिला दो।
हमें अपना सच्चा उपासक बना लो॥
हमें न किसी से कभी भय प्रभो हो।
सदा तेरे भक्तों की जय जय प्रभो हो॥
प्रभो हीन भावों से हमको बचा लो...

करो ज्ञान का मन-भवन में उजाला।
धधकती हो जीवन में जीवन की ज्वाला॥
प्रभु सुप्त शक्ति हमारी जगा दो...

तुझे हर्ष में शोक में हम न भूलें।
पिता प्यार की तेरी गोदी में झूलें॥
मति शुद्ध माता हमारी बना दो...

सदा वेद के हम मधुर गीत गाएँ।
श्रुति गान से सब दिशाएँ गुँजाएँ॥
लगन यह प्रभु हम सभी को लगा दो...

प्रभु वेद के भेद समझें सभी हम।
कुपन्थों में ईश्वर न भटकें कभी हम॥
प्रभो भाव भद्दे हमारे भगा दो...

विमल वेद धारा धरा पर बहावें।
दुखी दीन को हम गले से लगावें॥
हमें प्रेम से देव रहना सिखा दो।
सुधा प्रेम की हे सुधाकर पिला दो॥

प्रेम का आवास

मन सदन में हे दयामय! दिव्य ज्योति को जगाओ।
देव हम अल्पज्ञ हैं कल्याण पथ हमको दिखाओ॥
हम विह्वल व्याकुल व्यथित कर्त्तव्य पथ से हट रहे हैं।
अपनी भूलों ही के कारण आप से हम कट रहे हैं॥
सान्त्वना सद्प्रेरणा से आज हम सबको सजाओ...
हे प्रभु सङ्घर्ष में साहस हमारा मन्द न हो।
आप की वृष्टि दया की हे दयामय! बन्द न हो॥
हे प्रभु! सङ्कल्प शक्ति नित्य भक्तों की बढ़ाओ...
हे पिता उर में हमारे प्रेम का आवास हो।
धर्म वैदिक पर हमारा दृढ़ अटल विश्वास हो॥
ज्योति पुञ्ज सर्वज्ञ ईश्वर दूर सब संशय भगाओ...
मन सदन में हे दयामय दिव्य ज्योति को जगाओ॥

जीवन सुधारिए

दयावान दयानिधि दया से निहारिए
कष्ट और पाप ताप हमें न सतावें नाथ।
जागृति व चेतना का नित्य रहे नाथ साथ॥
भावना यह भव्य प्रभु मन में उभारिए...
सायं प्रातः करें हम सन्ध्या व उपासना।
नियमित जीवन हो इतनी है याचना॥
देव दुराचार सारा जड़ से उखाड़िए...
पथ भ्रष्ट हों न हम, दूर करो सारे भ्रम।
जीवन में लावें हम सारे यम और नियम॥
दीनबन्धु दुःख सारे धरती के टारिए...
दयावान दयानिधि दया से निहारिए॥

ऋषि हममें पुनः होवें

विनय प्रातः है यह प्रीतम सफल जीवन बना पावें।
उठें सद्भाव जो मन में उन्हें व्यवहार में लावें॥

करें सब दूर हम दूषण बनें भूमि का हम भूषण।
बनें निर्भीक नर नायक न हम अभिमान में आवें॥

यदि देखें दुःखी कोई तो पीड़ित हो उठें तत्क्षण।
जगत् हित प्राण देकर के जगत् की जान हो जावें॥

कपिल गौतम दयानन्द से ऋषि हममें पुनः होवें।
महामानव पतञ्जल बन जगत् को मार्ग दर्शावें॥

न निर्धनता यहाँ नाचे न हो हममें कोई भूखा।
करें सब दूध फल सेवन सभी अन्न पेट भर खावें॥

मधुर भाषण, मधुर जीवन, मृदुल आना मृदुल जाना।
मधुर शुभ भाव हों मन में मधुर सुख गान हम गावें॥

न हों हम आलसी भीरू न हम लोभी कृपण होवें।
बनें पुरुषार्थी दानी विजय ध्वज ईश लहरावें॥

करें पूजन प्रभु तेरा मिटे अज्ञान मल-मन का।
रहें संयम में 'जिज्ञासु' यही जगती को समझावें॥

फँसा है आज क्यों जीवन प्रभो मृत्यु के जबड़ों में।
लिया जब जन्म है जग में तो जग को जीना सिखलावें॥

पञ्जाबी भजन

मङ्गलकार्यों के समय का गीत

कर तूँ मेहर मेरे करतार।
खुशियाँ वेखे सब संसार॥
चोरा चिन्ता दूर भजावीं।
साडे सारे कष्ट मिटावीं॥
वेखन सारे मौज बहार। कर तूँ...
सुख सम्पत्ति दाता पाईये।
तेनूँ मनो न कदी भुलाईये॥
करदे रहिये पर-उपकार। कर तूँ...
हसदे वसदे दाता रहिये।
मिलके भैणां भाई बहिये॥
करिये हर प्राणी सङ्ग प्यार। कर तूँ...
सुन्दर घड़ी तूँ ईश वखाई।
सारे आये देन बधाई॥
स्वामी सङ्कट मोचन हार।
कर तूँ मेहर मेरे करतार॥

कोई जाने या न माने

दयामय देव हम जीवन विमल अपना बना लेवें।
प्रभु सन्ताप धरती के सभी मिलकर मिटा देवें॥
जलाओ ज्ञान की ज्योति प्रभो मन में अँधेरा है।
प्रभो दिन रात पापों का यहाँ रहता बसेरा है॥
यह मन भगवान हम बलवान भक्ति से बना लेवें...
बनें निर्भीक वैदिक धर्म के हम देव दीवाने।
करें सबका भला भगवन् कोई जाने या न माने॥
आडम्बर आज जड़ पूजा का हम जड़ से हिला देवें...
सुनावें वेद की घर घर अमर प्रीतम मधुर वाणी।
हमें प्राणों से है प्यारी अमर वाणी यह कल्याणी॥
यही रस्ता है जन कल्याण का सबको बता देवें...
प्रभो आए शरण तेरी भगाओ भय सभी भगवन्।
बनें बलवान हम गुणवान यह ऊँचा करें जीवन॥
धरा पर आज प्रीतम प्रेम की गङ्गा बहा देवें...

वरुण करुण

हे प्रेम निधि हे वरुण करुण हम शरण तुम्हारी आए हैं।
दुःख ताप हिये के सब सङ्कट हम भेंट तुम्हारी लाए हैं॥
हे पतितोद्धारक परम पिता तुम दीन दुखी के त्राण प्रभु।
शुचि वेद श्रुति के तुम दाता अघ नाशक ज्ञान निधान प्रभु॥
क्या नाथ बताएँ क्या बीती क्या हमने पाप कमाए हैं...
सुखदायी परम सहायक हो जगदीश्वर कष्ट निवारक हो।
देते तुम दण्ड कुकर्मों का न्याय के परम प्रकाशक हो॥
हमने तुझको तज कर भगवन् धक्के पर धक्के खाए हैं...
अपमान सहें न नाथ कभी इतना अब बल हममें भर दो।
संहार करें नित दुष्टों का यह रुद्र सखे हमको वर दो॥
आशीश हमें जगदीश्वर दो हम याचक बनकर आए हैं...
स्वालम्बी बनें पग आगे धरें अन्याय तनिक न सहन करें।
छल मल मन से सब दूर करें न कभी झूठ पर प्रभु अड़ें॥
धीरज की भिक्षा से भर दो ये हाथ जो नाथ उठाए हैं...

सुधा सिंधु

प्रभु जी हमें दिव्य ज्योति दिखाओ।
हमें प्रीति रीति की नीति सिखाओ॥
पिता हैं हिये शुष्क प्यासे हमारे।
सुधा सिंधु इक घूँट अमृत पिलाओ॥

बनें दृढ़ सबल निष्ठ हम पुत्र तेरे।
हमें वीर दृढ़ धीर ईश्वर बनाओ॥
न भयभीत हों हम कभी भी प्रभुवर।
हमें आन पर सिर कटाना सिखाओ॥

प्रभु बल से हम दुष्ट दल को दबाएँ।
हमें जन हितैषी विचारक बनाओ॥
दया नेह धरती से क्यों मिट गये हैं।
दिलों में पिता प्रेम गङ्गा बहाओ॥

उर में मेरे आग रहे

सुख वैभव को पाकर भगवन् तेरी याद भुलाऊँ न।
घिर कर के मैं विपदाओं में किञ्चित् भी घबराऊँ न॥

ज्ञान गुणों से सुरभित ईश्वर रहे वाटिका जीवन की।
पवन प्रेम की पावन भगवन् शोभा हो इस उपवन की॥
अन्यायी का पोषक बनकर अपयश ईश्वर पाऊँ न...

वैदिक पथ पर चलते-चलते अमर कीर्ति पाऊँ मैं।
विनय वीरता से जगती के पीड़ा ताप मिटाऊँ मैं॥
किसी झमेले में पड़कर के ध्येय धाम विसराऊँ न...

मन हो मेरा वश में मेरे श्रद्धा से भरपूर रहे।
पाप भावना कदाचार की मुझसे कोसों दूर रहे॥
जड़ को चेतन देव समझकर मस्तक कभी झुकाऊँ न...

राग द्वेष से रहूँ अछूता मन में यह अनुराग रहे।
लेखराम-सी सदा धधकती उर में मेरे आग रहे॥
पद का भूखा बनकर हानि जाति को पहुँचाऊँ न...

प्रेरणा की सम्पदा

सत्यनिष्ठा से सुवासित दिव्य जीवन यह बने।
भव्य भावों से विभूषित प्रेम रस में यह सने॥
मन सदन में प्रेरणा की सम्पदा का कोष हो।
जोश में हो होश मुझको होश में भी जोश हो॥
बुझ न जाए यह कदापि मेरे मन की ईश ज्वाला।
यह निराशा की निशा में आग करती है उजाला॥
चेतना आशा से जीवन वाटिका सुरभित रहे।
धमनियों में रक्त उष्ण शूरवीरों का बहे॥
विश्व में डिग-डिग के भी उठ-उठ के पग बढ़ता रहे।
रश्मियाँ लेकर विजय की सूर्य नित चढ़ता रहे॥
कोई जगती में भी साथी न भले ही साथ हो।
घूर कर आएँ बलाएँ घोर सङ्कट नाथ हो॥
दामिनी विध्वंस की सिर पर हो मेरे दमकती।
मौत हो आँखें दिखाती हो दुनुजता गर्जती॥
उस विषम वेला में मेरा मन न डगमग हो प्रभो।
तेरी ज्योति से सदा जीवन में जगमग हो प्रभो॥

जग में प्रकाश कर दें

कर्त्तव्य निष्ठ प्राणी ईश्वर हमें बनाना।
सद्भाव सत्य निष्ठा मन में सदा जगाना॥
आसन बने तुम्हारा यह मन सदन हमारा।
दृढ़ नींव पर टिका हो जीवन भवन हमारा॥
तेजस्विता निडरता दृढ़ता हमें विनय दो।
धीरज व दक्षता दो स्थिरता हमें विजय दो॥
अन्यायी आततायी अरिदल का नाश कर दें।
हम वीरता का अपनी जग में प्रकाश कर दें॥
निर्बल दुखी अकिंचन सबके बनें सहाई।
भगवन् हमारे मन में हो धुन यही समाई॥
पाखण्ड सब मिटा दें दुर्दैव को भगा दें।
हम जागरूक प्रहरी संसार को जगा दें॥
हो स्रोत प्रेरणा का सद्ज्ञान वेद प्यारा!
यह विश्व में बहा दें पावन पुनीत धारा॥

गूँज उठे सारा संसार

व्रतपति जग के पालनहार, विनय सुनो हे प्राणाधार।
विश्व नियामक न्यायकारी, हे दुख भञ्जक सर्वाधार।
जीवन पथ पर चलते जावें, सकल कर्म हों वेदानुसार।
दूर अँधेरा हो हर मन से, उदित हिये में हों सुविचार॥
निर्भय होकर सत्य सुनावें।
फूले फले विश्व परिवार॥
जीवन में जड़ता न आवे, उभरे रहें यही उद्‌गार।
ओ३म् नाम नित जपें तुम्हारा, व्रत पालन होवे शृङ्गार।
आर्ष पथ पर सब कुछ वारें, गूँज उठे सारा संसार।
दयानन्द की दिव्य भावना।
करें मानवों में सञ्चार॥

जीवन को मैं सजाऊँ

बल बुद्धि देव देना कर्त्तव्य मैं निभाऊँ।
अज्ञान अघ अँधेरा संसार से मिटाऊँ॥
यश मान ज्ञान पाकर अभिमान से बचूँ मैं।
पद लोभ लालसा में यह जन्म न गवाऊँ॥
मन में हों भाव सुन्दर उर में हों ये उमङ्गें।
पीड़ित दुखी की सेवा यह लक्ष्य मैं बनाऊँ॥
दिन रैन यह विनय है यह कामना है मेरी।
शोषण किसी का करके धन माल न कमाऊँ॥
जननी का मान मुझको हो जान से भी प्यारा।
ऋषियों की जन्मभूमि का मान मैं बढ़ाऊँ॥
पुरुषार्थी बनूँ मैं आलस्य को तजूँ मैं।
बातें न मैं बनाऊँ कुछ करके मैं दिखाऊँ॥
निर्भीक वीर भगवन् ऐसा मुझे बनाओ।
मैं ओ३म् की ध्वजा को संसार में फैराऊँ॥
श्रद्धा से नित्य प्रीतम पूजन करूँ तुम्हारा।
मैं लेखराम वाले रस्ते पै पग बढ़ाऊँ॥
सर्वस्व हो हमारा वैदिक विचारधारा।
सौजन्य सभ्यता से जीवन को मैं सजाऊँ॥

दयानन्द का जय-जयकार

जिसके तेजोमय जीवन से जाग उठा सारा संसार।
उस नर नामी योगी ध्यानी दयानन्द का जय जयकार॥
धीरज संयम साहस विद्या थे जिसका जीवन शृङ्गार।
उस नर नामी योगी ध्यानी...
प्रबल युक्तियाँ सुनकर जिसकी हुए विरोधी सब लाचार।
उस नर नामी योगी ध्यानी...
भागे पोंगा पंथी ढोंगी जिसकी सुन करके हुङ्कार।
उस नर नामी योगी ध्यानी...
जिसने खण्डन खड़्ग चलाकर किया अविद्या का संहार।
उस नर नामी योगी...
जिसने भद्दे भेद भगाए सिखला कर के सद्व्यवहार।
उस नर नामी योगी...
जिसने बिछड़े गले लगाये पाए जन जन ने अधिकार।
उस नर नामी योगी...
जिसने पीड़ित दुखिया दीनों का कीना आकर उद्धार।
उस नर नामी योगी...
भारत ने नवजीवन पाया जिसके पाकर विमल विचार।
उस नर नामी योगी...
कौन सुनाए कौन गिनाए उसके 'जिज्ञासु' उपकार।
उस नर नामी योगी ध्यानी दयानन्द का जय जयकार॥

तो भर पेट मेरी पिटाई न होती *

जो ज्योति ऋषि ने जगाई न होती।
तो यूँ दुम अविद्या दबाई न होती॥

यदि भूत भय का भगाता न स्वामी।
तो भारत ने शोभा यह पाई न होती॥

कोई राम का नामलेवा न होता।
जो मुर्दा यह जाति जिलाई न होती॥

न यूँ नारियाँ मान विद्या को पातीं।
गुरुवर ने ईंटें जो खाई न होतीं॥

न तन तानकर हम तनिक भी निकलते।
जो स्वामी ने नीति सिखाई न होती॥

कोई वेद की न ऋचाओं को गाता।
अगर जान स्वामी लुटाई न होती॥

न नेहरू जी गद्दी पै आसीन होते।
जो बिगड़ी ऋषि ने बनाई न होती॥

न कोई संगीनों से सीना अड़ाता।
लगन जो ऋषि ने लगाई न होती॥

'पथिक' न जवानी को ऐसे लुटाता।
अगर राह ऋषि ने दिखाई न होती॥

न गाँधी अहिंसा की घुट्टी पिलाते।
सुधा ज़हर पी जो पिलाई न होती॥

सुधि न हमें देश दुनिया की होती।
सुधा वेद की जो पिलाई न होती।

यदि न ऋषि भक्त 'जिज्ञासु' होता।
तो भर पेट तेरी पिटाई न होती॥

न हम रहते सख़्ती को सहकर भी आर्य।
अगर आग स्वामी लगाई न होती॥

* यह गीत मैंने नेहरू-युग में कैरोंशाही के अमानुषिक अत्याचारों को सहकर पुलिस के पंजे से छूटने पर रचा था। 'आर्य' साप्ताहिक के एक ऋषि अङ्क में छपने पर बड़ा लोकप्रिय हुआ था। थोड़ा बदलकर यहाँ दिया है।

कौतुक तिरे निराले

वेदों की तान मीठी, सुन्दर सुनाने वाले।
ज्ञानी सजग ऋषि थे, जग को जगाने वाले॥
तप त्याग सत्य संयम, थे सम्पदा तुम्हारी।
डटकर अडिग रहा तू, दुनिया विरोधी सारी॥
ज्योति प्रभु की पाकर, तम को मिटाने वाले...
व्रत कर कठोर धारण, ऋषियों के नाम लेवा।
पत्थर भी हँस के खाये, सेवा का समझ मेवा॥
विषपान सन्त करने, निकला सुधा पिलाने...
बन्धन को तोड़ करके, स्वाधीनता मिली है।
दलितों के दिल की स्वामी, खुलकर कली खिली है॥
तेरे प्रताप से ही, तन को तपाने वाले...
भय भ्रम सभी भगाए, वेदों का दे उजाला।
शक्ति का शङ्ख फूँका धधकी प्रचण्ड ज्वाला॥
निर्भय बनाया हमको, बिगड़ी बनाने वाले...
अन्याय घाती योद्धा, वह विश्व-प्रेमी साधु।
जादू रहे न टोने, ऐसा चलाया जादू॥
घातक के प्राणदाता, नवयुग के लाने वाले...
कौतुक गए सभी के, कौतुक तिरे निराले।
तुझ पर चलाए भाले, विष के पिलाए प्याले॥
खण्डन खड्ग चलाकर, पाखण्ड मिटाने वाले।
ज्ञानी सजग ऋषि थे, जग को जगाने वाले॥

धरा पर नवयुग आया

सत्य सनातन धर्म वेद का लिए उजाला।
आया उर में लेकर अरमानों की ज्वाला॥
किया सुसज्जित संयम वा साहस से जीवन।
सतत साधना साधु की सम्पत्ति साधन॥
घोर तपश्चर्या से अपने तन को पाला।
निर्भय होकर विपदाओं में जीवन डाला॥
सङ्कट सहे अनेकों, साधु न घबराए।
मान प्रतिष्ठा पाकर, योगी न इतराए॥
अतुल शौर्य से अपना खण्डन खड्ग चलाया।
नित्य वेद का गूढ तत्त्व जग को समझाया॥
सत्य निष्ठ ने इस निष्ठा का मूल्य चुकाया।
जनहित देकर जान अमर पद योगी पाया॥
श्रुति श्रवण का खोया, फिर अधिकार दिलाया।
घोर तिमिर को चीर, धरा पर नवयुग आया॥
जागी मानो जग में फिर ईश्वर की वाणी।
हुई व्यक्त अव्यक्त हुई फिर से वर दायिनी॥
हुआ ऋचाओं से फिर से संसार सुवासित।
वेद गान से हुई दिशाएँ पुनः प्रकाशित॥
कृत्रम भेद भगाए, युग ने ली अङ्गड़ाई।
खुले धर्म के द्वार, ऋषि जब अलख जगाई॥
वेद विहित जन जन को फिर कर्त्तव्य सुझाए।
कर सत्यार्थ प्रकाश हमें मन्तव्य बताए॥
धन्य धन्य ऋषिराज हमें कर्मण्य बनाया।
कर्मठता का पूजा से फिर मेल कराया॥
दीन दुखी के त्राण गान हम तेरा गाते।
ऋषियों की सुरतान, शीश हम आज निवाते॥

ऐक्यवादी दयानन्द

ओ३म् ध्वजा पाखण्ड खण्डिनी, फिर से जग में फहराई।
तूने आकर एक प्रभु की, पूजा फिर से सिखलाई॥

शिव है न्यारा, विष्णु न्यारा, झगड़े ऐसे चलते थे।
सत्य सूर्य का लोप हुआ था, खूब अन्धेरे पलते थे॥
एक ईश के नाम अनेकों? यह क्या नूतन बात बताई...

वाद अनेकों उपज रहे थे, राग सभी के न्यारे थे।
इष्ट सभी का न्यारा-न्यारा, बिखरे मोती सारे थे॥
दूई द्वेष की जड़ें उखाड़ीं, युग ने ली फिर अङ्गड़ाई...

गली-गली में न्यारे-न्यारे, मन्दिर और शिवालय थे।
अपने-अपने ग्रन्थ सभी के, सबके पन्थ निराले थे॥
ऐक्यवाद का शङ्ख तुम्हारा, सुनकर उखड़े पन्थाई...

बनी कुरीति रीति जग की, ताना बाना बिगड़ा था।
बाल विवाह था छूतछात थी, जातपात का रगड़ा था।
खण्डन खड्ग लिए जब निकले, काँप उठी थी कुल्याई...

अभिवादन भी एक नहीं था, निश्चय सभी अनिश्चित थे।
दास देश के हम वासी थे, कुण्ठित भाव अविकसित थे॥
गूँजा शब्द नमस्ते ऐसा, ऐक्य भावना फिर आई...

अण्ड बण्ड पाखण्ड मिटाने, निकले योद्धा स्वामी के।
श्रद्धानन्द सरीखे मानव, लेखराम नर नामी से॥
शीश तली पर धर कर निकले, श्यामलाल से अनुयायी...

आर्यवीरो सुनो आज फ़िर, जग को जगमग करना है।
पीड़ा पाप धरा का सब, सन्ताप तुम्हीं को हरना है॥
तुमको निज कर्त्तव्य सुझाने, दीवाली देखो आई...

जोगी नाद बजा गया

फिर पावन वेद अनादि का इक जोगी नाद बजा गया।
फिर भटकी मानव जाति को पथ सीधा सरल दिखा गया॥
हम भूल चुके थे ईश्वर को हर कङ्कर शङ्कर माना था।
जड़ को हम चेतन समझे थे बिगड़ा सब ताना बाना था॥
वह ज्ञान उजाला देकर के भ्रम संशय सकल मिटा गया...
कबरों पर शीश झुकाते थे नदियों पर धक्के खाते थे।
साँपों को दूध पिलाते थे हम ईश्वर भक्त कहाते थे॥
वह ईशोपासक जोगी हमको ईश्वर भक्त बना गया...
औरों से हाथ मिलाते थे अपनों को दूर भगाते थे।
पत्थर को भोग लगाते थे भाइयों को हम तड़पाते थे॥
फिर नीति प्रीति रीति की वह साधु सन्त सिखा गया...
सन्देश ऋषि का धरती के मानव को आज सुनाएँगे।
दुःख सङ्कट सारे झेलेंगे अपना कर्त्तव्य निभाएँगे॥
हमको वह जीवन देकर के जीवन का पाठ पढ़ा गया।
फिर वैदिक धर्म अनादि का इक जोगी नाद बजा गया॥

ईश से—

कौन?

कौन तेरे वेद का पावन उजाला लेके आया?
किसने तेरे नाम का संसार में डङ्का बजाया?
किसने दुखिया दीन लोगों की सुना चित्कार को?
रो उठा दलितों की सुनकर कौन हाहाकार को?
लोकहित में ढाल किसने अपने सीने को बनाया...
विश्व वञ्चित हो गया था वेद वाणी से तुम्हारी।
किसने सब सुख साज तजकर वेद हेतु जान वारी?
वेद की ज्योति से किसने आके जग को जगमगाया?...
जूझना किसने सिखाया हीनता किसने भगाई?
स्फूर्ति सञ्चार करके आग जन-जन में लगाई॥
देश के दु:ख देखकर के कौन बोलो तिलमिलाया?...
विश्व था चक्कर में आया थे अनेकों दूत तेरे।
बन रहे थे ब्रह्म भ्रम से अल्प ज्ञानी पूत तेरे॥
किसने ये संशय मिटाया किसने कल्पित भ्रम मिटाया?...
नाम पर तेरे विधाता ढोङ्ग कितना चल रहा था?
भय से बोझिल थी मनुजता सत्य न्याय जल रहा था॥
किसने आकर ढोङ्गियों का मान मर्दन कर दिखाया?...
पाप करने के लिए ही पुण्य करते जा रहे थे।
नित्य नूतन मोक्ष दाता पन्थ बनते जा रहे थे।
किसने आके मर्म फिर सत्कर्म का हमको बताया?...
भूत खण्डहर झाड़ कङ्कर के हमें भय खा रहे थे।
हम निशा में नाश की निश्चित दिशा को जा रहे थे॥
किसने आकर यह ऋजु पथ सूझ से हमको सुझाया?...
था दयानन्द तत्त्ववेत्ता! दीनबन्धु ब्रह्मचारी।
वेद रक्षक पारदर्शी देश की बिगड़ी सुधारी॥
उसने ही झकझोर करके नींद गहरी से जगाया।
कौन तेरे वेद का पावन उजाला लेके आया?

नया युग उमड़कर उमङ्गों से आया

सहे कष्ट लाखों नहीं लड़खड़ाया,
वतन को पतन के गढे से निकाला।

निबल दीन असहाय थे देशवासी,
विदेशी सभी खिल्लियाँ थे उड़ाते।
निशा थी सघन मेघ छाये हुए थे,
बिना रोक हुल्लड़ निशाचर मचाते।
वह आया लिए वेद भानु को स्वामी,
चतुर्दिक हुआ विश्व में फिर उजाला॥

सकल ज्ञान गौरव पुराना लुटाकर,
कभी की वतन एकता खो चुका था।
घृणा द्वेष जाति में घर कर चुके थे,
जनम भूमि का भाग्य ही सो चुका था।
पुनः सुप्त शक्ति हिलाई जगाई,
वह आया ऋषि वेदवाला निराला॥

जो नेता थे मारग से भटके हुए थे,
कुमारग में जाति यह अटकी हुई थी।
किया आतताइयों ने बरबाद भारत,
यूँ ही जान भारत की लटकी हुई थी।
वह सोतों को झकझोर जिसने जगाया,
था स्वामी दयानन्द साहस की ज्वाला॥

परतन्त्र अकिंचन थे भारत निवासी,
मेरे देश का मान ही लुट रहा था।
ऋषि देश की दुर्दशा सह सके न,
अविद्या से दम देश का घुट रहा था।
वह दी जिसने आकर ठगों को चुनौती,
वह था दिव्य योगी ऋषि वेदवाला॥

श्रुति के श्रवण पर प्रतिबन्ध टूटा,
नया युग उमड़कर उमङ्गों से आया।

पिलाई सुधा देश जाति को जिसने,
हलाहल का प्याला उसी को पिलाया।
दुखी दीन जन के हिये ने पुकारा,
हमें गर्त से उस ऋषि ने निकाला॥
वह निर्भीक साधु सुधारक निराला,
हिये मातृभूमि का जिसने टटोला।
किया चूर राजों का अभिमान जिसने,
कभी धमकियों से वह साधु न डोला।
हुआ देश स्वाधीन जिसकी दया से,
दयानन्द स्वामी तिरा बोलबाला॥

महर्षि सन्देश तेरा

हमने सुनकर भी न समझा महर्षि सन्देश तेरा।
हम समझकर भी न पालन कर सके आदेश तेरा॥
हमसे तेरे देश के दुखड़े मिटाये न गये।
हमसे सोये भाग्य भारत के जगाए न गये।
हमसे आर्य देशवासी भी बनाए न गये।
हमसे निज कर्त्तव्य किञ्चित भी निभाए न गये।
देखते ही रह गए हम कट गया यह देश तेरा...
हम न तेरी राह पर दृढ़ता से ये पग धर सके।
हम नहीं साकार स्वामी स्वप्न तेरा कर सके।
हम नहीं श्रद्धा से श्रद्धानन्द के सम बढ़ सके।
हम नहीं निर्भीक होकर रूढियों से लड़ सके।
मात खा गये विश्व में हम सुनके भी उपदेश तेरा॥
एक दिन संसार में तेरा ऋषि जयकार होगा।
वेद की वीणा बजेगी विश्व का उद्धार होगा।
देह दूई की दहेगी—प्राणियों में प्यार होगा।
वेद की निष्ठा से सुरभित फिर सकल संसार होगा॥
माँगता तप त्याग स्वामी हमसे कार्य शेष तेरा।
हमने सुनके भी न समझा महर्षि सन्देश तेरा॥

स्वामी वेदोंवाला

जन हित में दे गया अपनी जान स्वामी वेदों वाला।
उर में कुछ लाया वह अरमान स्वामी वेदों वाला॥
जोगी ने अलख जगाई। वेदों की महिमा गाई॥
ईश्वर का नित्य अनादि ज्ञान...
ईश्वर है एक बताया। युक्ति से यह समझाया॥
कण-कण में व्यापक है भगवान्...
ईश्वर है अजर अजन्मा। उसकी है कैसी प्रतिमा?
पत्थर को समझो न भगवान्...
दुनिया के दम्भी काँपे। पापी पाखण्डी हाँपे॥
सीने में लाया वह सद्ज्ञान...
दलितों से प्रेम सिखाया। बिछड़ों को गले लगाया॥
नवयुग का कर गया नव निर्माण...
कल्पित भय भूत भगाए। कायर भी शूर बनाए॥
मुर्दों में डाली फिर से जान...
'रत्तो'[१] की देख उमङ्गें। डॉक्टर[२] की देख तरङ्गें॥
डायर ओडवायर भी हैरान...
घुट्टी क्या घोट पिलाई। 'बिस्मिल' की होश भुलाई॥
भारत पर हो गये वे बलिदान...
अमींचन्द की पलटी काया। गुरुदत्त ने जीवन पाया॥
सुनकर के ऋषिवर की सुरतान...
सीने पर गोली खाकर। जीवन की भेंट चढ़ाकर॥
करते श्रद्धानन्द भी गुणगान...
आओ 'जिज्ञासु' गाओ। वीरो जयघोष लगाओ॥
आया वह मानवता का मान...

१. महाशय रत्नचन्द मार्शला बन्दी।
२. डॉ० सत्यपाल।

पाखण्ड खण्डिनी पताका

ग्राम–ग्राम और गली–गली से ध्वनि आज यह आती है।
धर्म वेद की दयानन्द की जय–जय जनता गाती है॥
ढोङ्ग ढाङ्ग के तर्क तोप से भवन हमीं ने ढाए हैं।
अण्ड–बण्ड पाखण्ड पाप के भू पर भवन बिछाए हैं॥
ओ३म् ध्वजा पाखण्ड खण्डिनी लहर–लहर लहराती है...
छुरे तोप तलवार के डर से कौन हमें जो रोक सके।
वेद अनादि पथ पर चलने से हमको जो टोक सके॥
ज़ुल्म की आँधी इस ज्वाला को अरे और भड़काती है...
गौरा शाही के डर से जब दिल्ली का दिल डोला था।
सीना अपना सङ्गीनों के सन्मुख हमने खोला था॥
श्रद्धानन्द स्वामी की दिल्ली पावन याद दिलाती है...
श्याम कृष्ण वर्मा से शासक लण्डन में थर्राते थे।
'बिस्मिल' जैसे आर्य वीरों से गोरे घबराते थे॥
जो तनी चाँदनी चौक में बढ़कर यही हमारी छाती है...
हमने ही तो छूतछात के भद्दे भेद मिटाए हैं।
हमने ही छल छद्म पाप के छक्के खूब छुड़ाए हैं॥
हमने सङ्कट सहे तभी तो नारी विद्या पाती है...
नम्र शान्त यह सेना पर है अड़ियल वीर जवानों की।
सदा जूझते झंझट से उन धर्मवीर दीवानों की॥
लेखराम की सेना को न ज़ालिम मौत डराती है...
जड़ पूजा का पाप मिटाए बिना नहीं हम रह सकते।
अन्धकार अज्ञान का डेरा नहीं धरा पर सह सकते॥
गैय्या मैय्या दीन दुखी की पीड़ा हमें बुलाती है...
धर्म–वेद की दयानन्द की जय–जय जनता गाती है॥

वेदों वाले स्वामी

वेदों वाले स्वामी, तेरी वाणी अनमोल।
जड़ से जड़ता हिलाई, ईश्वर पूजा सिखलाई॥
खोली ढोङ्गों की पोल...
जय-जय जग के हितकारी। जय-जय योगी ब्रह्मचारी॥
सुन्दर काया सुडौल...
मानें यह सब नर नारी। हम हैं तेरे आभारी॥
देखा दिल को टटोल...
तेरे अद्‌भुत दीवाने। सारी जगती पहचाने॥
पा गये जीवन का मोल...
सुध बुध गुरुदत्त विसराई। तर गई उसकी तरुणाई॥
घुट्टी दे दी क्या घोल...
स्वामी श्रद्धानन्द नामी। बिस्मिल रोशन बलिदानी॥
मनुआ उनकी जय बोल...
मारो छाती पै गोली। भरदूँ माँ की मैं झोली॥
अड़ गये सीने को खोल...
गोरे शासक घबराये। लण्डन बैठे थर्राये॥
डोले आसन अडोल...
वेदों वाले स्वामी तेरी वाणी अनमोल॥

शिवरात क्या वह आई

ईश्वर की वेद-वाणी जग को सुनाने वाले।
गुजरात में वो जन्मे तम को मिटाने वाले॥
कर्त्तव्य सब सुझाए, मन्तव्य सब बताए।
तन तानकर वे आए, सब दम्भ दुर्ग ढाए॥
विषपान आप करके, अमृत पिलाने वाले...
अपनी सुधि भुलाकर, यह देश लुट रहा था।
अज्ञान की घुटन में, दम सबका घुट रहा था॥
जाति बचा गये वो, जड़ता भगाने वाले...
हम आप सड़ रहे थे, भगवान् गढ़ रहे थे।
गौरव गुमान खोकर, जीते जी मर रहे थे॥
ऋण क्या ऋषि चुकाएँ, जीना सिखाने वाले...
शिवरात क्या वह आई, बनकर प्रभात आई।
सोतों का भाग्य जागा, नवचेतना वह लाई॥
श्रद्धा से सिर झुकाएँ, फिर से जिलाने वाले।
ईश्वर की वेदवाणी, जग को सुनाने वाले॥

* यह गीत टङ्कारा में रचा गया था।

जय बोलो दयानन्द की

देश के सुधीर हो, कष्ट पीर चीर दो, पाप घाती वीर हो।
जय बोलो दयानन्द की।
द्वेष को विसार दो, विश्व को सुधार दो, वेद के विचार दो।
जय बोलो दयानन्द की।
सत्य का प्रकाश हो, पाप का विनाश हो, आश न निराश हो।
जय बोलो दयानन्द की।
दुष्ट दल का दलन, शत्रुओं का दमन, हिंसकों का हनन हो।
जय बोलो दयानन्द की।
आश का निवास हो, शक्ति भक्ति पास हो, लोभ का ह्रास हो।
जय बोलो दयानन्द की।
वेद नित्य ज्ञान है, ईश का विधान है, मानवता का मान है।
जय बोलो दयानन्द की।
दीन गो गुहारती, भारती पुकारती, आरती उतारती।
जय बोलो दयानन्द की।
भेद भाव डोलता, विश्व राह टटोलता, काल आज बोलता।
जय बोलो दयानन्द की।
प्यार को पुकार लो, पुण्य का प्रचार हो, सोच्न लो विचार लो।
जय बोलो दयानन्द की।
सबका एक गान हो, भाव यह समान हो, यह सभी की तान हो।
जय बोलो दयानन्द की।

स्वामी जयकार तेरा

जन्मे टङ्कारा अन्दर, स्वामी जयकार तेरा।
मुर्दों में जीवन डाला, कितना उपकार तेरा॥
मुनियों के मान स्वामी,
ऋषियों की आन स्वामी।
यतियों की शान स्वामी,
सबके अभिमान स्वामी॥
गाए गुणगान स्वामी, सारा संसार तेरा...
उर में अरमान लेकर,
जगहित में जान देकर।
नवयुग निर्माण कीना,
वेदों का ज्ञान देकर॥
दलितों का दिल बतलावे, बिछड़ों से प्यार तेरा...
पथ पर हम तेरे चलते,
सह लेंगे कष्ट घनेरे।
जीवन यह वार देंगे,
स्वामी हम सैनिक तेरे॥
मानेगी दुनिया इक दिन, स्वामी सुविचार तेरे...
वेदों का प्यार लेकर,
मन में सद्ज्ञान लेकर।
आए टङ्कारा में हम,
उर में अरमान लेकर॥
तेरा आचार ऊँचा, स्वामी शृङ्गार तेरा...
राजों का रोब सहा न,
निर्भय हो जग में विचरे।
तेरा उपदेश सुनकर,
कितने ही बिगड़े सुधरे॥
ईश्वर जो अजर अजन्मा, अविचल आधार तेरा।
जन्मे टङ्कारा अन्दर, स्वामी जयकार तेरा॥*

* यह गीत टङ्कारा में ही रचा गया था।

गुजरात ने तब दिन कर डाला

ईश्वर–पूजन सिखलाता था, डर पास न उसके फटका था।
वह वीतराग संन्यासी था, न चोर का उसको खटका था॥
उस योगी ने तो व्यभिचारी, राजा को भी फटकार दिया।
मृत्यु की धमकी सुन करके, वह मुसकाया ललकार दिया॥
जब करण कत्ल करने आया, तो स्वामी ने धिक्कार दिया।
तलवार के टुकड़े दो करके, वह साधु धीर दहाड़ दिया॥
निर्भीक यति उस योगी ने युग उलटे को पलटा डाला।
तिल तिल जलकर के स्वामी ने, फूँकी नवजीवन की ज्वाला॥
जय मृत्युञ्जय, जय बलिदानी, जय–जय साहस के अङ्गारे।
जय सत्यनिष्ठ, जय मुनि गुणी, जय–जय जाति के रखवारे॥
षड्यन्त्र दुष्टों ने रचकर साधु को ज़हर पिला डाला।
बोलो क्या थी वह दीवाली या था वह लोगो दीवाला॥
सद्धर्म वेद हित स्वामी ने, प्राणों का प्यार विसार दिया।
उस सुन्दर कुन्दन काया को, बस हँसते–हँसते वार दिया॥

ऐसी ज्योति जगाई दयानन्द ने

पीड़ितों के लिए हम तड़पते रहे। भाव उर में अनुपम मचलते रहे।
देश की हमने बिगड़ी बनाई सदा। व्यर्थ नादान हमसे बिगड़ते रहे॥
हमने सोचा कभी न किसी का बुरा। लोग हमसे तो यूँही झगड़ते रहे॥
कह सके न बुरे को कभी हम भला। हम बुराई के सम्मुख अकड़ते रहे॥
है बुराई बुराई से लड़ना अगर। यह बुराई तो हम नित्य करते रहे॥
ऐसी ज्योति जगाई दयानन्द ने। आँख में दुश्मनों की खटकते रहे॥
जिनको चिन्ता नहीं देश की कौम की। भूले भटके वे हमसे उलझते रहे॥
जब भी आई वतन पर मुसीबत कभी। झूमकर फाँसियों पर लटकते रहे।
देखकर दङ्ग दुनियाँ हुई क्या हुआ। हम सङ्गीनों के आगे गरजते रहे।
होश पाखण्डियों के तो ऐसे उड़े। नाम सुनकर हमारा खिसकते रहे॥
गाली गोली छुरे से कभी न डरे। हम अविद्या को हरदम रगड़ते रहे॥
वेद विज्ञान पावन को ही भूलकर। देशवासी हमारे भटकते रहे॥
हम न पहुँचेंगे मञ्ज़िल पै अपनी कभी। ऐसे वैसे जो राह में भटकते रहे॥

वेदाँ वाले ने

जागो आन जगाया वेदाँ वाले ने
वहम दियाँ जञ्जीराँ तोड़ो।
कबराँ दी पूजा नू छोड़ो॥
रस्ते सिद्धे पाया वेदाँ वाले ने...
करो कुरीति भाइयों ना।
पुट्ठे रस्ते जायो ना॥
इहो ऋषि फरमाया वेदाँ वाले ने...
इटाँ पत्थर रोड़े खादे।
बन्धन तोड़े स्वामी साडे॥
जिन्द नू घोल घुमाया वेदाँ वाले ने...
छूतछात दा बूटा पुटया।
गला गुलामी दा वी घुटया॥
बहादुर देश बनाया वेदाँ वाले ने...
देश विदेश च वीरो जाईये।
घर-घर वैदिक धर्म फैलाइये॥
एह फ़र्ज ऋषि बतलाया वेदाँ वाले ने...

छेद डाले भेद कृत्रिम

मन सदन को आज तेरी, याद से स्वामी सजाऊँ।
समझ मैं पाया नहीं यह, तेरा ऋण कैसे चुकाऊँ॥
तेरे कारण ऐ ऋषि हम, ईश विश्वासी बने।
महर्षि उपकार तेरे, है असम्भव मैं गिनाऊँ॥...
ग्रन्थ नूतन बन रहे थे, पन्थ नूतन बढ़ रहे थे।
ऐक्यवादी ऐ ऋषिवर, शीश मैं तुझको निवाऊँ॥...
हम तो वञ्चित हो गए थे, ईश के सद्ज्ञान से भी।
अब ऋचाओं का श्रवण कर, मैं सुपावन मन बनाऊँ॥...
हम तो थे जड़ के पुजारी, अपनी जड़ हमने उखाड़ी।
आज सृष्टि के नियन्ता की, स्तुति से मन रिझाऊँ॥...
बन चुके थे ब्रह्म भ्रम से, खो चुके थे अपनेपन को।
हो गया भ्रम का निवारण, झूमकर यह गीत गाऊँ॥...
तज दिया था धर्म ने, कर्मण्यता कर्त्तव्य को।
आज शौर्य शङ्ख तेरा, भक्ति भावों से बजाऊँ॥...
छेद डाले भेद कृत्रिम, महर्षि तू धन्य था।
एकता की तान स्वामी, तेरा गौरव गान गाऊँ॥...
वेद का डङ्का बजा दो, था ऋषि आदेश तेरा।
लक्ष्य सिद्धि के लिए मैं, भेंट जीवन की चढ़ाऊँ॥...

पिया हलाहल का प्याला *

जीवन-दीप बुझाकर किसने जग को जगमग कर डाला?
कौन सुधाकर जिसने हँस-हँस पिया हलाहल का प्याला?
जिसके प्यारे लेखराम ने छुरा पेट में खाया था।
पूत अकेला अपना जिसने कौम की भेंट चढ़ाया था।
चलती गाड़ी से कूदा था दयानन्द का मतवाला...
किस बाबा ने भारत को बिस्मिल रोशन वरदान दिया?
लाज वतन की लाजपत व श्रद्धानन्द महान् दिया॥
अरमानों का पर्वत थे, वे साहस की भीष्ण ज्वाला...
उसी ऋषि से ज्योति पाई फूल सिंह बलिदानी ने।
अड़ना लड़ना बढ़ना सीखा स्वतन्त्रानन्द सेनानी से॥
धन्य-धन्य वह देव दयानन्द दीन दुखी का रखवाला...
इन्हीं शहीदों के जीवन से कितनों का निर्माण हुआ।
श्याम सरीखे योद्धा का भी इस पथ पर बलिदान हुआ।
राजपाल ने प्राण लुटाकर भी अपने प्रण को पाला।
कौन सुधाकर जिसने हँस-हँस पिया हलाहल का प्याला॥

* यह गीत ऋषि गाथा कैसेट में है, परन्तु उसमें स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी भक्त फूलसिंह आदि के नाम काटकर और नाम जोड़कर न्याय नहीं किया।

अपनी भी पहचान करो

मानव यह जीवन पाया है, तो अपनी भी पहचान करो।
शुभ चिन्तन करके ईश्वर का, नर जीवन का उत्थान करो।
घर घाट सजाकर रखा है, इस मन को कभी सजाया न।
हो जीवन कैसे मधुर विमल, जब जीवन सरस बनाया न॥
बढ़चढ़ कर के शुभ कर्म करो, इस जगती का कल्याण करो...
दुर्व्यसनों को तुम दूर करो, शुचिता का व्रत लो जीवन में।
फिर प्रेम विनय के फूल खिलें, सृष्टि के सुन्दर उपवन में॥
पाकर के जीवन शक्ति को तुम, मानवता का मान करो...
बलवान मनस्वी वीर बनो, दृढ़ धीर बनो न वीर डरो।
मन शुद्ध विनीत करो अपना, बुद्धि न हीन मलीन करो॥
जीवन को सफल बनाना है, तो ईश्वर का गुणगान करो...
तुम ईश उपासक बन करके, जग में शक्ति सञ्चार करो।
कर धारण वैदिक शिक्षा को, सब तापों का उपचार करो॥
'जिज्ञासु' आर्य बनकर के तुम, जीवन का निर्माण करो...

ओ३म् का जाप करो

शुभ ओ३म् नाम सुखदायी ओ३म् का जाप करो।
ओ३म् नाम वेदों में आया, गीता उपनिषदों ने गाया॥
ओ३म् है परम सहाई, ओ३म् का जाप करो...
तीन ताप का हरनेवाला, भद्र भावना भरनेवाला।
भागे दूर बुराई, ओ३म् का जाप करो...
रोम रोम में रमा ओ३म् है। विश्व नियन्ता वही सोम है॥
हम सभी वेद अनुयायी, ओ३म् का जाप करो...
गया अन्धेरा आँखें खोलो, निर्भय होकर वीरो बोलो।
ऋषि दयानन्द अलख जगाई, ओ३म् का जाप करो...
नरवर लेखराम का प्यारा। 'रोशन' 'बिस्मिल' यही उचारा।
फिर महर्षि रीत चलाई, ओ३म् का जाप करो...

तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ

विपदाओं से क्या डरना है। मत सोचो कि क्या करना है
अन्धी आँधीं रात अँधेरी। माँझी तुम पतवार चलाओ
तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ
ऊपर नीचे दाएँ बाएँ। हों चाहे घनघोर घटाएँ॥
घेरें तुमको बले बलाएँ। साथी चाहे निकट न आएँ॥
फिर तरुणाई ले अङ्गड़ाई। उथल-पुथल तुम आज मचाओ॥
तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ
सुधबुध भूलें जो मस्ती में। जीवन का उपहार उन्हीं को॥
जो जीवन में कुछ करते हैं। कहने का अधिकार उन्हीं को॥
चेतन मस्तीवाले चेतो। फिर जग को हुङ्कार सुनाओ॥
तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ
अजगर सम सागर की लहरें। उठ-उठ करके रह जाएँगी॥
तूफानों के वेग में आकर। यह लहरें तो बह जाएँगी॥
हैं तूफान जो दिल में वीरो। तो उनके अरमान दिखाओ॥
तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ
क्या होगा अब यह न सोचो। कर दो अब जो कुछ होता है।
पाप न पनपे जग में चेतो। रोता खोता जो सोता है॥
दुर्गम पथ है चाहे कितना। मनज़िल अपनी मत बिसराओ॥
तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ
तुम रुकने की बात विसारो। दुर्जन दल को तुम ललकारो॥
जीवन का सिङ्गार लुटे न। वीरो देखो नयन उघारो॥
भाव लिये 'जिज्ञासु' ऐसे। यह वीरो सुरतान सुनाओ॥
तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ।

वलवलों की तान है

तर्ज—ओ३म् नाम प्यारा है जी ओ३म् नाम प्यारा है।

आन है हमारी और ईश का विधान है।
वेद ज्ञान आर्यों की जान और प्राण है।
लेखराम का लहू पुकार कर के कह रहा।
खून राजपाल का उसी की राह में बह रहा।
रामभक्त आर्यों के वलवलों की तान है॥ आन...

छूतछात भेदभाव का जो घोर घाती है।
वेद ज्योति हृदयों की वेदना मिटाती है।
वीर श्रद्धानन्द जिसका देवता महान् है॥ आन...

धर्म प्यारे कपिल और कृष्ण योगिराज का।
लाज लाजपत की व मान हंसराज का।
देश के दीवाने वीर बिस्मिल की तान है॥ आन...

जिसके लिए जेल में सुमेर जान वार दी।
दयानन्द जिसकी सोई भावना उभार दी।
पवन पुत्र वीर धीर जिसका हनुमान है॥ आन...

जिसके वीरों को न वार छुरे के डरा सके।
जिसके सन्त सीना थे संगीनों से अड़ा सके।
जिसके वीर सैनिकों की भावना जवान है॥ आन...

उठो चेतना का तिरस्कार न हो

धरा धाम पर धूम युवको मचाओ।
उठो मातृभूमि का गौरव बढ़ाओ॥
सुनो दीन दुखियों की आहें पुकारें।
उठो भावना दीन जन की उभारें॥
उजाले को लेकर अँधेरे मिटाओ...

त्रसित हृदयों से सकल भय निकालो।
मनोबल से पाखण्डियों को उछालो॥
अभावों का संसार आओ जलाओ...

निराशा निशा देश में छा गई है।
अकर्मण्यता देश में आ गई है॥
उठो लाज यौवन की वीरो बचाओ...

अभी विश्व में नीतियाँ हैं अनैतिक।
घुसी भावनाएँ मनों में अवैदिक॥
उठो भव्य भावों से सृष्टि सजाओ...

उठो चेतना का तिरस्कार न हो।
मनुजता का जग से बहिष्कार न हो॥
दयानन्द का काज करके दिखाओ...

मैं जो कहता हूँ करूँगा

जूझना मैं झंझटों से मुसकराना जानता हूँ।
उलझना मैं उलझनों से खिलखिलाना जानता हूँ॥
धीर हूँ मैं वीरता से पग सदा आगे धरूँगा।
मैं जो कहता हूँ करूँगा...

दूर कर दूँगा धरा से मैं निराशा का अँधेरा।
विकट बाधा सङ्कटों का तोड़ दूँगा आज घेरा॥
कष्ट पीड़ा प्राणियों की कष्ट सहकर भी हरूँगा।
मैं जो कहता हूँ करूँगा...

आज जन-जन में करूँगा आश का उज्ज्वल उजाला।
फूँक दूँगा प्राणियों में प्रेरणा की आज ज्वाला॥
भावना उद्धार की मैं आज जन-जन में भरूँगा।
मैं जो कहता हूँ करूँगा...

छाई जीवन घाटियों पै हों अगर काली घटाएँ।
मेरा रस्ता रोक दानव दनदनाएँ मुँह चिढ़ाएँ॥
वैरियों के दुर्ग ढाता गीत गाता मैं बढ़ूँगा।
मैं जो कहता हूँ करूँगा...

बिगड़ी बात बना सकते हो

बिगड़ी बात बना सकते हो।
पाप की लङ्क जला सकते हो॥
पदलोलुपता तज दो जो तुम।
झगड़े सभी मिटा सकते हो॥
लेखराम का पथ अपना कर!
लुटता देश बचा सकते हो॥
काज अधूरा दयानन्द का।
पूरा कर दिखला सकते हो॥
तुम चाहो तो आर्यवीरो।
दुर्दिन दूर भगा सकते हो॥
इसी डगर पर चलते-चलते।
मुर्दा कौम जिला सकते हो॥ १॥

मिशन ऋषि का पूछ रहा क्या।
जीवन भेंट चढ़ा सकते हो?
तुम सुधरोगे जग सुधरेगा।
जो कुछ बंचा बचा सकते हो॥
विजय मिलेगी, लेखराम सी।
धूनी अगर रमा सकते हो॥
वही पुरातन मस्ती लाकर।
जो चाहो फिर पा सकते हो॥
सत्य सनातन धर्म वेद की।
जय जयकार गुँजा सकते हो॥
त्याग तपस्या होगी तो फिर।
श्रद्धा का युग ला सकते हो॥ २॥

दम्भ दर्प जो घूर रहा फिर।
इसकी जड़ें हिला सकते हो॥
देश धर्म हित इस शासन से।
क्या तुम कुछ मनवा सकते हो?
अन्धी बहरी हैं सरकारें।
तुम रस्ते पर ला सकते हो?
सीस तली पर धर कर ही तुम।
बस्ती नई बसा सकते हो॥
दक्षिण में जो दिखलाया था।
क्या शौर्य दिखला सकते हो?
राजपाल व श्यामलाल की,
क्या घटना दोहरा सकते हो?
परमानन्द और सोमानन्द सम।
क्या फिर कष्ट उठा सकते हो?
लौह पुरुष के तुम वंशज हो,
भू पर शैल बिछा सकते हो॥ ३॥

स्मरण करो नारायण को तुम।
जो खोया है, पा सकते हो॥
'जिज्ञासु' अरमान जगाकर।
जीवन-शङ्ख बजा सकते हो॥
मन के शिवसङ्कल्पों से तुम।
जीवन दीप जला सकते हो॥
निशा निराशा हट जावेगी।
बढ़कर मञ्जिल पा सकते हो॥
डूब रही मँझधार बीच जो।
नय्या पार लगा सकते हो॥
मन के कुछ सद्भाव जगाकर।
फिर यह गाना गा सकते हो॥ ४॥

युवकों से—

अगर तुम दयानन्द को जानते हो

उठो आर्यवीरो, धरा तड़पती है।
घिनौनी घटा पाप की गर्जती है॥
जवानो, जवानी के जौहर दिखाओ।
उठो धूर्तों को धरा से मिटाओ॥
उठो आग दिल में अगर धधकती है...
जवानो जवानी रहेगी अविकसित।
जो निश्चय तुम्हारे रहेंगे अनिश्चित॥
उठो आज रग-रग अगर फड़कती है...
विषय वासना विश्व को खा रहे हैं।
भवन भाग्य का अपना हम ढा रहे हैं॥
उठो देख लो शिष्टता झुलसती है...
अगर धमनियों में लहू राम का है।
अगर मान कुछ कृष्ण के नाम का है॥
तो क्यों आस जननी की फिर तरसती है...
अभी दम नहीं जाति-पाति ने तोड़ा।
अभी तक नहीं फूट ने हमको छोड़ा॥
अँधेरे में दुनिया अभी भटकती है...
मजे से अभी ज्योतिषी ठग रहें हैं।
अभी दीप कबरों पे भी जग रहे हैं॥
अविद्या अभी झूमती मटकती है...
अभी भय नहीं राहु-केतु का भागा।
अभी तक नहीं विश्व सोया यह जागा॥
दनुजता धरा पर अभी कड़कती है...
अभी तक है सपना ऋषि का अधूरा।
कोई काज भी कर सके हम न पूरा॥
महानाश की दामिनी दमकती है...
अगर तुम दयानन्द को जानते हो?
अगर वेद पावन को तुम मानते हो?
तो फिर क्यों मुसाफिर की चाह सिसकती है...

भाग्य तेरा सो रहा है

कब तुझे इस दुर्दशा का, हाय हिन्दू बोध होगा?
आत्मघाती इन प्रवृत्तियों का, अरे कब शोध होगा॥
जगत् कर्त्ता ईश घर घर, लोग घड़ते जा रहे हैं।
भक्त बढ़ते जा रहे हैं! पुण्य घटते जा रहे हैं॥
हिल रही है जड़ तुम्हारी, बन रहा जड़ का पुजारी।
सबकी चिन्ता कर रहा तू, अपनी सब सुध बुध विसारी॥
पल रहा अज्ञान तेरा, मर रहे अरमान तेरे।
घट रही सन्तान तेरी, बढ़ रहे भगवान तेरे॥
बन रहा निस्तेज निशिदिन, चेतना क्यों खो रहा है।
शूरवीरों के ओ वंशज, भाग्य तेरा सो रहा है॥
मोक्ष उसको क्या मिलेगा? लोक न जिसने सुधारा।
उसका क्या प्रारब्ध सुधरे? जिसने उद्यम है बिगाड़ा।

कब स्वप्न साकार होगा?

क्या सुखी संसार होगा? पाप का संहार होगा?
क्या मिटेंगी ये बुराइयाँ? दूर भ्रष्टाचार होगा?
दीन दुखिया पीड़ितों का। क्या कभी उद्धार होगा?
देह दुई की जलेगी। प्रेममय व्यवहार होगा?
नारियों का मान होगा। सत्य का सत्कार होगा॥
क्या कभी सत्ता का जग में। न्याय फिर आधार होगा?
ईश के विश्वास से। सुरभिंत कभी संसार होगा॥
कौन जाने कब अँधेरे का अरे संहार होगा?
एक के सङ्कल्प से। बेड़ा सभी का पार होगा॥
तुम करो लावण्य निश्चय। फिर स्वप्न साकार होगा॥
देश में फिर चेतना का। एक दिन सञ्चार होगा॥

ऐ वेद-ज्ञानवालो

ऋषियों का ऋण उतारो वीरो तनिक विचारो।
आर्य विचार धारा संसार में प्रचारो॥
कर्त्तव्य पथ से विचलित क्यों आज हो गए हो।
जग को जगानेवालो क्यों आज सो गये हो॥
तजकर प्रमाद निद्रा आँखें सभी उघाड़ो......
मत पन्थ बढ़ रहे हैं, अज्ञान छा रहा है।
देखो! विनाश-पथ पर संसार आ रहा है॥
कर्मठ सुधीर वीरो फिर विश्व को सुधारो....
उर में वही पुरातन अरमान आज पालो।
ऐ वेद-ज्ञानवालो संसार को सम्भालो॥
जग जगमगाए जिससे सङ्कल्प आज धारो......
अब तक भी विश्व देखो जड़ को ही पूजता है।
सन्मार्ग प्राणियों को क्योंकर न सूझता है॥
जड़ता के सब अखाड़े संसार से उखाड़ो।
आर्य विचारधारा संसार में प्रचारो॥

तूफ़ान लिये

सीने में हम तूफ़ान लिये।
उर में अरमान जवान लिये॥
टक्कर लेने अन्यायी से।
औ फूट कलह कुल्टाई से॥
हम बढ़े तली धर प्राण लिए...

हम अरमानों की ज्वाला हैं।
साहस की पर्वतमाला हैं॥
ले भव्य भाव निर्माण लिए...

मरने का डर हम क्या जानें।
हम देश जाति के परवाने॥
हम जीवन का वरदान लिए...

आचार विचार सुधार सुधा।
कर पान सुधारे देश दशा॥
पग धरा धरा पर गान लिए...

हम तत्त्व ज्ञान का जान चुके।
हम अमर जीव यह मान चुके॥
नव युग में नूतन गान लिए...

जीवन में आज जवानी है।
यौवन में आज रवानी है॥
निकले आदर्श महान् लिए...

आर्यवीरों से

निकलो ऐ आर्यवीरो सोया संसार जगाएँ।
सोये अरमान जगाओ, मनज़िल को बढ़कर पाएँ॥
चीरो सब सङ्कट वीरो, कष्टों से न घबराएँ।
बिगड़ा सब ताना बाना, दुखिया है सकल ज़माना॥
आओ त्रयताप मिटाएँ.....

उर में इक आस लेकर, भावी का भवन बनाएँ।
जीवन इक भार बना है, जीने की कला सिखाएँ॥
निकलो कुछ कर दिखलाएँ.....

ईश्वर-विश्वास लेकर, ऐसी हुँकार सुनाएँ।
मन में उल्लास लेकर, धरती पर नवयुग लाएँ॥
गूँजें ये सकल दिशाएँ.....

प्राणी सब निर्भय विचरें, ऐसा परिवर्तन लाएँ।
सज्जन सब मिलकर गाएँ, वेदों की विमल ऋचाएँ।
ऋषियों की लाज बचाएँ.....

पूजें सब एक प्रभु को, कण-कण में रमे विभु को।
मन से न हम बिसराएँ, सोया संसार जगाएँ॥
उलटा युग यह पलटाएँ.....

साकार करेंगे

आज धरा का निकले हैं उद्धार करेंगे।
स्वप्न ऋषि का निश्चय ही साकार करेंगे॥
कूट कपट को नहीं कदापि सहन करेंगे।
कुटिल चक्र से काल कराल के नहीं डरेंगे॥
दम्भ दुर्ग पर निर्भय होकर वार करेंगे...
विश्व विरोधी भले हमारा सारा हो।
सङ्कट में नित जीवन भले हमारा हो॥
प्राण लुटाकर धर्म वेद से प्यार करेंगे...
झंझट और झमेलों से हम क्या घबराएँ।
तूफ़ानों से हँसते-हँसते हम टकराएँ॥
फँसी भँवर में जग की नौका पार करेंगे...
पीड़ित प्राणी व्याकुलता से रोदन करते।
सभ्य कहाने वाले निर्मम शोषण करते॥
दानवदल के दल बल का संहार करेंगे...

कौन?

कुटिल पाप से बिना तुम्हारे कौन आर्यो जूझेगा?
अन्धकार में रस्ता सीधा कहाँ किसी को सूझेगा?
कौन शूर जो शक्तिवाला फाग मौत से खेलेगा?
कौन ऋषि का साहस लेकर सङ्कट बाधा झेलेगा?
कौन प्यार पर आज वेद के खून की मुहर लगाएगा?
कौन सुमेरु बनकर अब फिर हिन्दी की जय गाएगा?
कौन जो गोली गोलों में भी आगे होकर गर्जेगा?
कौन 'लाज' की आस बनेगा आज कौन जो बर्सेगा?
कौन धनी विद्वान् जो घर का प्यार वेद पर वारेगा?
कौन जो श्रद्धा मन में लेकर सङ्कट सारे टालेगा?
जातपात की बन्धन कड़ियाँ कौन आज फिर तोड़ेगा?
उलटी गङ्गा की धारा को कौन आज फिर मोड़ेगा?
कौन आज पाखण्ड पाप का गर्व करेगा चकनाचूर?
कौन शूर जो शक्तिवाला करे अँधेरा जग का दूर?
लेखराम सी आग हिये में लिए बढ़ेगा आगे कौन?
अरे आर्यो! मुझे बताओ कौन तुम्हारा तोड़े मौन?
लिए प्रभु की ओ३म् पताका कौन बढ़े 'जिज्ञासु' आज?
मैं हूँ तेरा तू है मेरा मेरे प्यारे आर्य समाज॥

आर्यवीर की घोषणा

मैं आर्य हूँ मैं आर्य हूँ कुछ करके काज दिखाऊँगा।
ईश्वर का झण्डा धरती के उर आँगन में लहराऊँगा।
मैं छुरियाँ भाले क्या जानूँ।
जब जीव अमर मैं यह मानूँ॥
मैं सैनिक वीर सुधीरों का हर उलझन मैं सुलझाऊँगा।
दुशमन की तर्जन क्या जानूँ।
गोली का वर्षण क्या जानूँ॥
मैं शक्ति साहस गर्जन का नव गान सुनाता जाऊँगा।
मैं रण में अड़ना सीखा हूँ।
कष्टों से लड़ना सीखा हूँ॥
मैं वीर शिवा बन दुशमन को उलटे ही नाच नचाऊँगा।
मैं धर्म देश का दीवाना।
मैं वेद ज्योति का परवाना॥
मैं लेखराम की वेदी पर यह जीवन भेंट चढ़ाऊँगा।
है कौन जो रस्ता रोक सके।
है कौन मुझे जो टोक सके॥
मैं मानवता की आशा हूँ आगे ही बढ़ता जाऊँगा॥

आर्यो!

आर्यो! संसार का उद्धार करना है तुम्हें।
मौत से जीने की खातिर प्यार करना है तुम्हें॥
वेद की ज्योति से जग को जगमगा दो आर्यो।
पाप के पर्वत को तुम भू पर बिछो दो आर्यो॥
अज्ञान के संसार का संहार करना है तुम्हें...
दीन जन की पीड़ा का वीरो कलेजा चीर दो।
स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों की तुम तस्वीर हो॥
सोये अरमानों को फिर बेदार करना है तुम्हें...
बाग़ अपने को ही अपनों ने लगा दी आग है।
प्रीत का संगीत अब बीता पुराना राग है॥
डगमगाता आज बेड़ा पार करना है तुम्हें...
कौन धरती के मिटाएगा अरे सन्ताप को।
आग में डालेगा तुम बिन कौन अपने आपको॥
आज अपने आपको तैयार करना है तुम्हें...

इक इक को तड़पाना होगा

आर्यवीरो जीना है तो जीवन भेंट चढ़ाना होगा।
उलझ–उलझकर हर उलझन से इक–इक को सुलझाना होगा॥

आर्यवीरो आज धरा का कष्ट निवारण करना होगा।
केवल कहने से क्या होगा धर्म को धारण करना होगा॥
लेकर तड़प मुसाफिर वाली इक–इक को तड़पाना होगा...
कौन गिने और कौन गिनाए कितने जग को रोग लगे।
हिम्मत आर्यवीर करो फिर जग में वैदिक ज्योत जगे॥
हो संसार विरोधी चाहे तुमको तो मुसकाना होगा...
तुम गर्जो तो धरती में अरिदल के उर में कम्पन हो।
समय कहे तो सब कुछ अपना देश धर्म के अर्पण हो॥
विष के प्याले पी–पी करके अमृत तुम्हें पिलाना होगा...
आज तुम्हारे सीने में अरमानों का तूफ़ान उठे।
दयानन्द को जान से प्यारी यह आर्य सन्तान उठे॥
'बिस्मिल' जैसा यौवन साहस पौरुष आज दिखाना होगा...
आज कृष्ण की रामचन्द्र की आश का वीरो श्वास बनो।
वीरो अबला मानवता के श्वासों का विश्वास बनो॥
वेद भक्त 'जिज्ञासु' बनकर जीवन उच्च बनाना होगा...

कौन कदाचार आज विश्व से मिटाएगा?

कौन आज वेद ज्योति विश्व को दिखाएगा?

कौन जाति पाति जाति घाती को मिटाएगा?
बात-बात पर हैं देश में विवाद हो रहे।
कौन देश से यह आग द्वेष की बुझाएगा?

जो देश को बचा सकें वे हैं कहाँ जवानियाँ?
जो अपने रक्त से लिखें स्वदेश की कहानियाँ।
कौन भाग्य आज देश जाति का बनाएगा?...

मान आज देश का स्वदेश में है लुट रहा।
राष्ट्र एकता से प्यार का विचार मिट रहा॥
कौन देश घातियों से देश को बचाएगा?...

क्रूरता मनुष्य का स्वभाव आज बन गई।
शिष्टता से आज है अशिष्टता की ठन गई॥
कौन कदाचार आज विश्व से मिटाएगा...

आर्यवीर की घोषणा

मैं आर्य हूँ, मैं आर्य हूँ, कुछ करके आज दिखाऊँगा।
ईश्वर का झण्डा धरती के उर आङ्गन में लहराऊँगा॥
मैं छुरियाँ भाले क्या जानूँ।
जब जीव अमर मैं यह मानूँ॥
मैं सैनिक वीर सुधीरों का हर उलझन को सुलझाऊँगा।
दुश्मन का तर्जन क्या जानूँ।
गोली का वर्षण क्या जानूँ॥
मैं शक्ति साहस गर्जन का नव गान सुनाता जाऊँगा।
मैं रण में अड़ना सीखा हूँ।
कष्टों से लड़ना सीखा हूँ॥
मैं वीर शिवा बन दुश्मन को उल्टे ही नाच नचाऊँगा।
मैं धर्म देश का दीवाना।
मैं वेद ज्योति का परवाना॥
मैं लेखराम की वेदी पर यह जीवन भेंट चढ़ाऊँगा।
है कौन जो रस्ता रोक सके।
है कौन मुझे जो टोक सके॥
मैं मानवता की आशा हूँ आगे ही बढ़ता जाऊँगा।

पोल खोल ढोङ्गियों के ढोल की दिखाएँगे *

प्रेम का पीयूष प्राणियों को हम पिलाएँगे।
पाप दम्भ दर्प के ये दुर्ग आज ढाएँगे॥...

लेखराम का लहू है धमनियों में रम रहा।
गर्म कर गया सुमेर रक्त जो था जम रहा॥
पोल खोल ढोङ्गियों के ढोल का दिखाएँगे...

कौन है जो आर्यों के वलवले दबा सके।
कौन हमको छुरे तीर तोप से डरा सके॥
बार-बार जान वेद ज्ञान पर लुटाएँगे...

लेखराम के लहू की सुन रहे पुकार हम।
खून देके भी करेंगे विश्व का सुधार हम॥
राम के न नाम को प्रमाद से लजाएँगे...

कष्ट पीड़ आज दीन धेनु की निवारेंगे।
उर में भावना स्वदेश प्रेम की उभारेंगे॥
भाग्य सोया आज देश जाति का जगाएँगे...

मन में आज वलवले हैं वलवलों में जान है।
आज सीने में उठा हुआ नया तूफान है॥
विश्व को सन्देश दयानन्द का सुनाएँगे...

* यह गीत मैंने कैरोंशाही के अमानवीय अत्याचार व यातनाएँ सहकर पुलिस के पञ्जे से बाहर आते ही रचा था। क्रूर पुलिस अधिकारी कहते थे 'क्या फिर आर्यसमाज का नाम लोगे?' 'जिज्ञासु'

जगती को आज जरूरत है

जगती को आज जरूरत है, उन आर्यवीर जवानों की।
जिनके उर में है आग लगी, जिनके जीवन में मस्ती है॥
तन मन जिनका बस डोले न, जिनकी धरती पर हस्ती है।
बिन सोचे जो शुभ कर्म करें, उन वीरों की दीवानों की...
भयभीत न हों जो मृत्यु से, सच्चे ईश्वर विश्वासी हों।
जो सङ्कट में घबराएँ न, दुःख सुख के जो अभ्यासी हों॥
ऐ वीरो आज जरूरत है बिस्मिल से फिर परवानों की...
जो ऐक्य भाव को ले करके, मानव को खूब झंझोड़ सकें।
अज्ञान, अविद्या की गर्दन, निर्मम बन तोड़ मरोड़ सकें॥
धरती को आज जरूरत है, ऐसे अद्भुत विद्वानों की...
जिनको हो गर्व जवानी पर, जो रण में गर्जन कर सकते।
झट चीर कलेजा अड़चन का, वे वीर जो आगे बढ़ सकते॥
धरती को आज जरूरत है, उन गुणवानों बलवानों की...

आर्यों का वीर दल

आर्यों की शोभा शान आर्यों का वीर दल।
आर्यों की आभा आन आर्यों का वीर दल॥
काज पूरा करके यह समाज का दिखाएगा।
दूई द्वेष की यह दाह, वीर दल बुझाएगा॥
पाप घाती पुण्य प्राण आर्यों का वीर दल...
दे रहा है श्रेष्ठजन को वीर दल अदम्यबल।
आर्यों के उर की तान आर्यों का वीर दल...
यह समाज के अनेक दोष है भगा रहा।
सभ्यजन को वीर दल हिला-हिला जगा रहा॥
कर रहा है सावधान आर्यों का वीर दल...
ज्योति केन्द्र है हमारा वेद-ज्ञान ईश का।
पुण्य प्रेरणा का स्रोत मानवों का जो रहा॥
वेद भक्त निष्ठावान् आर्यों का वीर दल...

हम रुकना झुकना क्या जानें

हम रुकना झुकना क्या जानें।
हम बढ़ते हैं सीना ताने॥
हम सैनिक वीर शहीदों के।
परहित में जिनके शीश कटे।
हम दयानन्द के दीवाने...
जो गया राज में नेहरू के।
हम वीर हैं वीर सुमेरू के।
हम वेद ज्योति के परवाने...
हम हँस-हँस के दुःख झेलेंगे।
सर्वस्व धर्म पर दे देंगे।
ये लेखराम से मस्ताने...
हम कर्म वचन के सच्चे हैं।
हम धुन अपनी के पक्के हैं।
सब दुनियाँ ही हमको जाने...
दुःख आता है तो आने दो।
सुख जाता है तो जाने दो॥
हम वीर हैं डरना क्या जानें...

आर्य बालकों का सङ्कल्प

पग सदा आगे धरेंगे। स्वप्न में भी न डरेंगे॥
रुदन सुनकर पीड़ितों का। हम नहीं पीछे रहेंगे॥
दीन पीड़ित के लिए हम। आग में हँस हँस जलेंगे॥
देश के हैं हम दुलारे। देश पर हम मर मिटेंगे॥
पाप का पर्वत बिछाकर। आज भू पर हम चलेंगे॥
गोले गोली बर्छियों के। आगे डटकर हम अड़ेंगे॥
वीर श्रद्धानन्द की। हम प्राण आशा का बनेंगे॥
श्री राम के श्री कृष्ण के। हम चरण चिह्नों पर चलेंगे॥
काज पूरा आज सारा। महर्षि का हम करेंगे॥

महिमाँ वेदाँ दी

कही सुनी न जावे महिमा वेदाँ दी।
उपनिषदाँ विच आवे महिमा वेदाँ दी॥

गौतम कपिल पातञ्जलि वारी।
दयानन्द स्वामी बलिहारी॥
बेड़ा बन्ने लावे महिमा वेदाँ दी.....

परमेश्वर दा ज्ञान अनादि। एह सिख्या है सिधी सादी॥
गुरु ग्रन्थ वी गावे, महिमाँ वेदाँ दी.....

सुन्दर सृष्टि न्यारी-न्यारी, एह ईश्वर दी रचना प्यारी॥
ओह करतार कहावे, महिमा वेदाँ दी.....

अपना जीवन आप सुधारो। सोचो समझो ख़ूब विचारो॥
जो जागे सो पावे, महिमाँ वेदाँ दी.....

चित्त पापाँ दे विच न लाओ। ए बिरथा न जन्म गँवाओ॥
अण्डे माँस छुड़ावे, महिमाँ वेदाँ दी.....

वहमाँ तों हुण जिंद छुड़ाओ। ओ३म् नाम शुभ जपो जपाओ॥
जीवन सफल बनावे, सिख्या वेदाँ दी.....

जन हितकारी देश सुधारक

जग हितकारी देश सुधारक अपना प्यारा आर्य समाज।
ईशोपासक ज्ञान प्रसारक अपना प्यारा आर्य समाज॥
जड़ पूजा का घोर विरोधी, दम्भ दर्प का नाशक है।
अण्ड-बण्ड पाखण्ड विनाशक वैदिक धर्म प्रकाशक है॥
दीन दुखी का रक्षक पालक अपना प्यारा आर्य समाज...
जनहित कष्ट उठाने वाला जग का भाग्य जगाने वाला।
प्रेम सुधा वर्षाने वाला संशय सकल मिटाने वाला॥
ऐक्यवाद का प्रबल प्रचारक अपना प्यारा आर्य समाज...
त्रैतवाद के तत्त्वज्ञान की तान सुनाता आर्य समाज।
वैदिक धर्म अनादि का है गान सुनाता आर्य समाज॥
भेद निवारक उग्र विचारक अपना प्यारा आर्य समाज...
हमने वारा मानवता पर स्वामी श्रद्धानन्द महान्।
लाल लुटाया हमने अपना लेखराम ज्ञानी गुणधाम॥
विश्व हितैषी तारक सबका अपना प्यारा आर्य समाज...
जग हितकारी देश सुधारक अपना प्यारा आर्य समाज॥

जीवन सुधरेगा

पढ़ो वेद का ज्ञान जीवन सुधरेगा।
करलो अमृतपान जीवन सुधरेगा॥

परमेश्वर की पावन वाणी।
सुनकर बनिए ज्ञानी ध्यानी॥
सस्वर करिये गान जीवन सुधरेगा—

संशय सकल निवारण कर लो।
जीवन में यह धारण कर लो॥
होगा फिर कल्याण जीवन सुधरेगा—

मुनियों को प्राणों से प्यारा।
नित्य अनादि निर्मल धारा॥
गूँजे सकल जहान जीवन सुधरेगा—

उठो विश्व के सोने वालो।
उठो रात दिन रोने वालो॥
सुनो सुरीली तान जीवन सुधरेगा—

दयानन्द का दिव्य नाद है।
यही हमारा ऐक्यवाद है॥
राम कृष्ण सन्तान जीवन सुधरेगा—

आर्य समाज है

जग को जगानेवाला आर्य समाज है।
जग की पुकार है व युग की आवाज़ है॥
ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया।
जड़ की आराधना के पाप से बचा लिया॥
ढोङ्ग ढाङ्ग जिसके भय से डोल रहा आज है...
ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का फैला हुआ ओर छोर जाल था॥
जिसने दीन देश जाति की बचाई लाज है...
नारियाँ भी वेद का हैं गान आज कर रहीं।
रूढ़ियाँ कुरीतियाँ हैं अपने आप मर रहीं॥
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है...
कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन मौत से हमें जो जूझना सिखा गया॥
श्रद्धानन्द, लेखराम, प्यारा हंसराज है...
देश हित में वार दीं अनेक ही जवानियाँ।
इसने रक्त से लिखीं स्वदेश की कहानियाँ॥
लाजपत लुटा के आज पा लिया स्वराज है...
कौन भोगवाद से जो विश्व को बचाएगा।
पाप पुण्य क्या है कौन आज यह सुझाएगा॥
मानवीय रोग का तो एक ही इलाज है...

आर्यवीर गान

चेतना प्रसार कर

जाग जग में आर्यवीर चेतना प्रसार कर।
फूँक शङ्ख शौर्य का विलासिता विसार कर॥
भ्रष्ट पथ से आज देश और विश्व हो गया।
तू मनोविनोद राग रङ्ग में ही खो गया॥
छद्म छल के दुर्ग पर सशक्त बन प्रहार कर...
जग में शिष्टता का आज हो गया अभाव है।
तेज बल दिखा धरा के धूर्तों पै वार कर...
दुष्ट दैत्य देख दीन जन को आज दल रहे।
देख! निर्बलों के भावना भवन हैं जल रहे॥
उठ मनुष्यता के आज वैरियों पै वार कर...

धर्मवीर लेखरामजी

जय शूरवीर जय धर्मवीर जय-जय हो सच्चे सेनानी।
जय-जय प्राणों के निर्मोही जय-जय वैदिक पथ अनुगामी॥
जय अलबेले जय दीवाने जय देश धर्म के मस्ताने।
जय प्राणवीर जय कर्मवीर जय मृत्युञ्जय जय बलिदानी...
जय वीर व्रती जय ज्योति पुञ्ज जय आर्यजाति के गौरव धन।
जय तपोनिधि जय विप्र गुणी जय-जय हे सच्चे स्वाभिमानी...
तेरे उर में इक ज्वाला थी तेरे जीवन में आभा थी।
हे लौह लेखनी के लेखक तेरी ब्राह्मण अद्भुत वाणी...
गर्जन में तेरी जादू था शब्दों में तेरे जीवन था।
तेरी गतियों में सौरभ थी तेरी तरुणाई मस्तानी...
छुरियों की छाया में रहकर सन्देश सुनाया स्वामी का।
प्राणों से तुझको प्यारी थी वेदों की वाणी कल्याणी...
इक पूत जिगर का टुकड़ा था सुखदेव भी अपना वार दिया।
कर याद कहानी यह तेरी नयनों में आता है पानी...
वैरी कायर ने समझा था फूँकों से दीप बुझा दूँगा।
पर ज्वाला थी यह धधक उठी, तेरे जीवन से नर नामी...
पथ पर हे तेरे धर्मवीर जीवन 'जिज्ञासु' वारेंगे।
अज्ञान तिमिर को चीरेंगे बोलेगी जन-जन की वाणी...

रक्तसाक्षी पं० लेखराम

लेखराम थे महान्, वीर साहसी सुजान।
तेरा नाम भी महान्, तेरे काम भी महान्॥
डोले दम्भ के मीनार, तेरी सुनके दहाड़।
धन्य-धन्य लेखराम, बना शूरता की शान॥
देख वलवलों की आग, याद आ गया जुझार।
तेरी लेखनी में ओज, तेरी वाणी रामबाण॥
किया ज्ञान का उजाला, उदय हुआ वेदभान।
वार डारी प्यारी जान, धन्य तेरा प्राणदान॥
आततायी कैसे आया, ढोङ्ग शुद्धि का रचाया।
छुरा छल से चलाया, किया रक्त से स्नान॥
वह था राम का दुलारा, ज्ञानवान् विप्र न्यारा।
सच्च झूठ को नथारा, सारा जानता जहान॥
लाज कृष्ण की बचाई, धूम राम की मचाई।
लाल कौम के बचाय, आया कौन सीना तान?॥
झकझोर कर हिलाया, सोई जाति को जगाया।
हित अहित सुझाया, दे दे वेद के प्रमाण॥
सारी रूढ़ियों को रौंदा, पथ वेद का सुझाया।
ईश एक है बताया, जो है सर्वशक्तिमान्॥
तेरे लहू ने उबारा, बाल वृद्ध ने विचारा।
दे गए कौन कौन जान, राजपाल से जवान॥
फूलसिंह से सुधीर, नाथूराम प्राणवीर।
श्यामलाल से सुवीर, कई हुये लहूलुहान॥
स्वप्न तेरा जो अधूरा, होगा एक दिन पूरा।
कहे देके रक्तधार, श्रद्धानन्द मतिमान्॥
गूँजे जग में जयकारा, लेखराम प्यारा प्यारा।
रक्तसाक्षी महान्, दीन दलित के मान॥

पं० लेखराम के प्रति

वह इतिहास बना गया

लेखराम बलिदानी योद्धा, जीवन भेंट चढ़ा गया।
तन, मन, धन सर्वस्व लुटाकर, ऊँचे कर्म कमा गया॥
देश धर्म का दीवाना, वह नरनामी नरनायक था।
दीन-दुखी का सेवक था, दलितों का वीर सहायक था॥
परहित जीवन भेंट चढ़ाकर, वीरगति को पा गया.....
मरने का डर वह क्या जाने, वह ईश्वर विश्वासी था।
रामकृष्ण का वंशज प्यारा, सच्चा भारतवासी था॥
जन्म-मरण के भेद मुसाफ़िर सारे हमें बता गया.....
छुरियों और कटारों से वह अङ्गारों से खेला था।
वीर शहीद निराला मानस, बलिदानी अलबेला था॥
ढोङ्ग-ढाङ्ग के तर्क-तोप से, सारे किले गिरा गया.....
जातिहित में लेखराम ने क्या कुछ नहीं लुटाया है।
रचकर ग्रन्थ अनूठे उसने, वैदिक नाद बजाया है॥
जीवन लिखते अमर ऋषि का, आप अमर पद पा गया.....
'जिज्ञासु' वह नामी ज्ञानी, परम तपस्वी वेदाभिमानी।
हर सङ्कट में नर-नाहर ने डटकर अपनी छाती तानी॥
गर्व करें हम जिसपर ऐसा, वह इतिहास बना गया।
लेखराम बलिदानी योद्धा जीवन भेंट चढ़ा गया॥

क्या अन्त तेरा हो गया
तीखी छुरी की धार से?

सींची ऋषि की वाटिका, अपने लहू की धार से।
तूने अमर पद पा लिया उपकार से उपकार से॥
ईश्वर की वाणी वेद पर, तेरा अटल विश्वास था।
निर्भीक होकर गर्जना, तेरा यह गुण इक खास था॥
जीते विरोधी सैकड़ों, निज तर्क की तलवार से.....
परिवार का घरबार का, तुमको तनिक न ध्यान था।
बस लक्ष्य तेरा वीरवर, बलिदान था बलिदान था॥
क्या अन्त तेरा हो गया, तीखी छुरी की धार से.....
गाथा अमर तेरी पथिक, देती अनूठी प्रेरणा।
करता रहा संसार में, सञ्चार प्रतिपल चेतना॥
जन मन में कैसे घुस गया, अपने मृदुल व्यवहार से.....
तू ज्ञान का भण्डार था, तेरी निराली शान थी।
सिर धर तली फिरता रहा, तेरी यही पहचान थी॥
गूञ्जेगी धरती, यह सदा, तेरी पथिक जयकार से.....
वाणी में तेरी ओज था, उर में तिरे उद्गार थे।
बेटा भी प्यारा दे दिया, दिल में तिरे अंगार थे॥
कइयों पै छाई कपकपी, डरकर तिरी हुँकार से।
क्या अन्त तेरा हो गया, तीखी छुरी की धार से॥

जय-जय श्रद्धानन्द महान्

जय-जय श्रद्धानन्द महान्, जय-जय युग के गौरव गान।
जय-जय मानवता के मान, जय-जय जननी के अभिमान॥
जय-जय गुणी मुनि बलिदानी, जय-जय धर्मवीर सेनानी।
जय-जय जीवन की सुरतान, जय-जय दीन दुखी के त्राण।
सेवा व्रत के हे व्रतधारी, तेरी हिम्मत पर बलिहारी...
विरोधी भी करते गुणगान जागे जाति के अरमान।
परहित कष्ट कठोर उठाए कौतुक साहस के दिखलाए॥
जो है वीरों की पहचान, अड़ गये रण में छाती तान...
डेरा गङ्गा पार लगाया, गुरुकुल वन में जा बनवाया।
धुन के धनी निराली शान, अपने बेगाने हैरान॥
जगती को शौर्य दिखलाया, जनहित सीना ढाल बनाया...
गूँजे धरती और वितान, तेरा अद्भुत था बलिदान।
असम्भव सम्भव कर दिखलाया ऐसा शुद्धि चक्र चलाया॥
देकर जनहित अपनी जान मर कर हुए अमर मतिमान...

शौर्य का अतुल हिमाला

वैदिक धर्म अनादि का अद्‌भुत मतवाला।
स्वामी श्रद्धानन्द यतिवर वेदों वाला॥

वेद विहित कर्त्तव्य सकल स्वामी सिखलाए।
कर्म अनूठे करके निज मन्तव्य बताए॥
विनय वीरता का सङ्गम वह सन्त निराला...

निर्भय होकर रण में गर्जन करने वाला।
भव्य भावना नर नारी में भरने वाला॥
फिर से निर्जीवों में जिसने जीवन डाला...

सङ्कट सागर की लहरों को जिसने चीरा।
हरता रहा सदा जो दीन दुखी की पीड़ा॥
धुन का धनी मनस्वी साहस की वह ज्वाला...

जिसने उलटी गङ्गा की धारा को मोड़ा।
जाति घाती जातपात का बन्धन तोड़ा॥
छूतछात का भूत भयानक सन्त निकाला...

वह जननी का गौरव धरती का उजियारा।
वह मुनियों की शोभा साहस का अङ्गारा॥
प्राण लुटाकर जिसने प्रण अपने को पाला...

प्राणों का निर्मोही वह बलिदानी स्वामी।
युग निर्माता विश्व विभूति वह सेनानी॥
वह भारत का भाल शौर्य का अतुल हिमाला...

सन्तान श्रद्धानन्द की

जानता इतिहास सारा शान श्रद्धानन्द की।
खोजते हैं कान मेरे तान श्रद्धानन्द की॥
गा रही गङ्गा की लहरें सुबकियाँ लेते हुए,
वाटिका क्यों हो गई वीरान श्रद्धानन्द की...
गोलियाँ खाईं जहाँ, हा! उस भवन* का क्या बना?
हो गई बदनाम यह, सन्तान श्रद्धानन्द की...
पूछती पावन ऋचाएँ कौन उत्तर दे इन्हें?
क्यों हुई सन्तान है बेजान श्रद्धानन्द की...
आर्यों की शूरता फिर शत्रुओं ने देख ली।
मिल गया पूरा पता ले जान श्रद्धानन्द की...
सिद्ध नाथूराम[१] ने यह सीस देकर कर दिया।
जीना मरना जानती सन्तान श्रद्धानन्द की...
जान देकर वह दुलारा राज[२] प्यारा कह गया।
एक दिन गूँजेगी फिर सुरतान श्रद्धानन्द की...
फूलसिंह[३] ने गोलियाँ खाकर दिखाई शान फिर,
जान देकर के दिखाई आन श्रद्धानन्द की...
श्याम[४] ने विष पान कर जब दी उसे श्रद्धाञ्जलि,
फिर उठी हुङ्कार कर सन्तान श्रद्धानन्द की...
एक साधु[५] ने लोहारू में लहू देकर कहा,
हो रही सन्तान फिर कुर्बान श्रद्धानन्द की...
गीत ऐसा फिर कोई तू आज 'जिज्ञासु' सुना,
आर्यों को हो पुनः पहचान श्रद्धानन्द की...
गोलियों की भी दनादन में था बाबा[६] घूमता,
मानती उपकार है सन्तान श्रद्धानन्द की...
कह रहा है इक मुनि सुनिये ऋषि उद्यान में,
उठ खड़ी हो सन्तति मतिमान श्रद्धानन्द की...
हे सुधा सिंधु प्रभो! हम आर्य शक्तिमान् हों,
माँगती सन्तान यह वरदान श्रद्धानन्द की।
जानता इतिहास सारा शान श्रद्धानन्द की॥

* ला० रामगोपाल शालवाले द्वारा किराये पर दिया गया श्रद्धानन्द बलिदान भवन।

१.-२.-३.-४. आर्यहुतात्मा। ५. स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी।

६. स्वामी सर्वानन्दजी महाराज।

वलवलों की आग स्वामी श्रद्धानन्द

धन्य उसकी साधना थी, धन्य उसका त्याग था।
स्वामी श्रद्धानन्द तो इक वलवलों की आग था॥
दीन दुखियों के लिए, लड़ता रहा अड़ता रहा।
स्वामी श्रद्धानन्द हर मैदान में बढ़ता रहा॥
उसके उर में लोक-सेवा के भरे अरमान थे।
पाप घाती पूज्य स्वामी शूरता की शान थे॥
वीर था, वह विप्र था, जननी का गौरव भाल था।
सङ्कटों के सामने सीना मुनि का ढाल था॥
रूढ़ियों को रौंदता कल्याण पथ गामी बना।
सत्य निष्ठा से वह श्रद्धानन्द नरनामी बना॥

देवता स्वरूप भाई परमानन्दजी

दीन दुःखी के लिए तपस्वी। दिल दर्दीला लेकर आया।
देश धर्म के काम जो आया। ऐसा उसने नरतन पाया॥
लिखे लेखनी कैसे गाथा। क्या क्या उसने कष्ट उठाया॥
ऋषियों मुनियों का अनुगामी।
जीवन उसने सफल बनाया॥
वह बलिदानी कुल में जन्मा।
कुल का गौरव मान बढ़ाया॥
परहित तिल-तिल जल-जल उसने। इक नूतन इतिहास बनाया॥
ज्ञानी गुणी विचारक ऐसा। गोरों ने भी सीस झुकाया॥
रोती धोती रह गई मृत्यु। उसको सन्मुख हँसता पाया॥
देश विदेशों में जा करके।
वेदों का सन्देश सुनाया॥
हँसते-हँसते भारत माँ पर।
तन मन धन सर्वस्व लुटाया॥
देखो मुनि मनस्वी ऐसा। कोई प्रलोभन खींच न पाया॥
जीना मरना खेल समझकर। उसने जीवन यज्ञ रचाया॥
श्वास-श्वास जनहित में देकर। उसने उच्च अमरपद पाया॥

लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी

वह बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव थे हमारे

जिनको था वेद प्यारा, ईश्वर के थे जो प्यारे।
वह बाल ब्रह्मचारी, गुरुदेव थे हमारे॥

निबलों के थे सहारा, दलितों के दिल की बस्ती।
सब इन्द्रियों को जीता, ऐसी महान् हस्ती॥
मोही में जन्म पाया निर्मोही सन्त न्यारे॥

सबके भले की खातिर, दुःख कष्ट सब उठाए॥
जब सामने वह आए, अंग्रेज़ लड़खड़ाये॥
स्वामी कौपीनधारी, रांजों के मद उतारे...

ऐ देश के जवानो, भूलो न यह कहानी।
कैसे तुम्हें सुनाएँ, नयनों से बहता पानी॥
जिसने सहे कुल्हाड़े, स्वामी वे थे हमारे...

ब्रह्मचारियों में नामी, ज्ञानी गुणी सुनामी।
वह एकता के हामी, भारत की शान स्वामी॥
ऋषियों के नाम लेवा, वह देव के दुलारे...

पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी के जीवन की एक घटना उनके अभिनन्दन समारोह के शुभ अवसर पर ४-११-९५ को अजमेर में ब्र० जितेन्द्रजी ने यह गीत अत्यन्त भावपूर्ण ढङ्ग से गाया था।

क्यों मौत की चिन्ता करूँ?

वह अङ्ग सङ्ग भगवान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
वह महान् से भी महान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
मैं जीव हूँ, मैं अमर हूँ, यह सत्य है, यह सत्य है।
डरना भी मरण समान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
वह नाथ मेरे साथ है, मेरा अटल विश्वास है।
ऋषिवर का यह फर्मान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
निर्भय बनो आगे बढ़ो, गुरुदेव का आदेश है।
साधु की इसमें शान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
परहित में जीवन जब दिया, चोला यह अपना रंग लिया।
श्रद्धा की अब पहचान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
क्या अङ्गरक्षक मैं करूँ? मेरा ईश मेरे पास है।
वह सर्वशक्तिमान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
मेरे पूज्य श्रद्धानन्द हैं, निर्भीक जो निर्भीड़ थे।
मुझे याद पथिक महान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
घण्डराँ चलो चम्बा चलो, यह बात मुझसे मत कहो।
मुझे दीनजन का ध्यान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
यहाँ आएँ सब निर्भीक हो, मठ में न अङ्गरक्षक घुसें।
रक्षक यहाँ भगवान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
न बम्ब के विस्फोट से, न मैं डरूँ बन्दूक से।
ऋषि कर गया विषपान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
पिस्तौल से हम न डरे, खञ्जर छुरे हम पर चले।
मेरी वही फिर तान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
सेवा में वैदिक धर्म की, निकलेंगे मेरे प्राण ये।
मुझे ईश का वरदान है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?...
वह अङ्ग सङ्ग भगवान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?
वह महान् से भी महान् है, क्यों मौत की चिन्ता करूँ?

वीर चिरञ्जीव की बलिदान शताब्दी पर १९९३ में रचा गया गीत

जय चिरञ्जीव बलिदानी की

जय बोलो ऐ आर्य वीरो चिरञ्जीव बलिदानी की।
जय जय बोलो उसकी माँ की, जय बोलो क्षत्राणी की॥
सबसे पहले सुना ऋषि को, लुधियाना की नगरी में।
पलट गया अब जीवन उसका, बदली एक जवानी थी॥
वेद-धर्म हित जगह-जगह पर उसकी हुई धुनाई थी।
धूम मचाई घर-घर उसने परमेश्वर की वाणी की॥
सबसे पहला वैदिक धर्मी कारागार बसाने वाला।
सुन-सुन रो पड़ते नर नारी, ऐसी करुण कहानी थी॥
शूरवीर बलवान् गठीला, गायक नायक क्या कहना।
मुंशीराम सरीखा नेता, चाल बड़ी मस्तानी थी॥
नारी रक्षक दीन सहायक, सदाचार का पुतला था।
कौन सुनावे गाथा पूरी, उस योद्धा लासानी की॥
अबलाओं के लिए लड़ा वह, सीस हथेली पर धर कर।
ख़ून बहाया निर्भय होकर, जय आर्य सेनानी की॥
वीर अहिंसक परोपकारी जाति रक्षक सच्चा था।
दुष्ट दलों से भिड़ने वाली भावों भरी जवानी थी॥
सुरा विरोधी सबसे पहले उसने ही अभियान चलाया।
परहित ईंटें पत्थर खाए, वाह! वाह! जीवन दानी की॥
वह ईश्वर विश्वासी प्यारा, अरमानों की ज्वाला था।
श्रद्धानन्द ने लिखी कहानी, धर्म वेद अभिमानी की॥
हीरासिंह महाराजा ने भी, उसका था सन्मान किया।
भूल गई अब आर्य जाति, उसकी अमर कहानी जी॥
गीत उसी के गाकर के 'खुरसन्द' कभी थे धन्य हुए।
याद करेंगे श्रद्धा से अब उसकी सब कुर्बानी जी॥
चमूपति जी जिसकी अमर कहानी लिखकर गर्वित थे।
स्वतन्त्रानन्द भी चर्चा करते मृत्युञ्जय बलिदानी की॥
लेखराम के वीरो जागो, जागो वंशज राम के।
सब कुछ ईश्वर ही करता है, यह कहना नादानी जी॥
आओ! आओ!! मत विसराओ उस स्वर्णिम इतिहास को।
चिरञ्जीव ने पाप शैल से टकराने की ठानी थी॥
दलित दुःखी उद्धारक की जय, जय-जय जनहितकारी की।
जय-जय ऋषिवर के अनुगामी, जय-जय हो गुणधामी की॥
विनय यही 'जिज्ञासु' की है, आर्यजनों की सेवा में।
भूल न जाओ, शौर्य गाथा, अलबेले उस नामी की॥

काकौरी के हुतात्मा ठाकुर रोशन सिंह की एक घटना

मन में लेकर के उमङ्गें। तन में ले नूतन तरङ्गें॥
उर में इक अरमान लेकर। वे तली पर प्राण लेकर॥
राजसत्ता को बदलने। चल दिये युग को पलटने॥
युग ने पागल कह पुकारा। कुछ भी सोचा न विचारा॥
मातृ-भूमि के दुलारे। वे धधकते थे अङ्गारे॥
वे गुलामी को मिटाने। चल दिये ज्योति जगाने॥
दे गये देखो जवानी। उनकी अद्भुत है कहानी॥
लाठियाँ खा झूमते थे। बेड़ियों को चूमते थे॥
आह तक करते नहीं थे। मौत से डरते नहीं थे॥
बात इक आओ बताएँ। घटना रोशन की सुनावें॥
फाँसी का जब हुकम पाया। मौत को जी भर चिढ़ाया॥
दण्ड बैठक पेलने में। मस्त थे वे खेलने में॥
मातृ का चिन्तन किया। और ओ३म् का पूजन किया॥
इक सिपाही ने कहा यह। वीर क्या तू कर रहा यह?
खिलखिला कर मुँह को खोला। मुस्कराते वीर बोला॥
क्यों नियम अपना मैं तोडूँ? क्यों सुपथ को आज छोडूँ?
यह जवानो है जवानी। जिसमें हो ऐसी रवानी॥
गान उनका गा रहे हैं। चेतना हम पा रहे हैं॥

यह शिक्षा कल्याणी

पढ़ लो वेद की वाणी जो सुख पाना है।
परमेश्वर से प्रेम बढ़ाओ, आओ मन की मैल मिटाओ।
यह शिक्षा कल्याणी जो सुख पाना है...
प्रातः जागो करो स्नान, आसन करके बनो जवान
काबू करो जवानी जो सुख पाना है...
फल कर्मों का कभी न टलता, पक्ष कभी न ईश्वर करता।
कर लो याद जवानी जो सुख पाना है...
जादू टोने कबरें छोड़ो, युग की उल्टी धारा मोड़ो।
छोड़ो सब मनमानी जो सुख पाना है...
मात-पिता का कहना मानो, देश उठाओ वीर जवानो।
रीति यही पुरानी जो सुख पाना है...

मानवता का मान

मानवता का मान दयानन्द। दीन दुःखी का त्राण दयानन्द॥
जन हितकारी, पर-उपकारी। है युग गौरव गान दयानन्द॥
जिसने की मृदु अमृत वर्षा। करते हैं विषपान दयानन्द॥
हमें सुना गणराज की वीणा। दी जनहित में जान दयानन्द॥
देते हैं निज घातक को भी। वाह! जीवन का दान दयानन्द॥
संयम की है जीवित प्रतिमा। व्रतधारी बलवान् दयानन्द॥
मातृ-शक्ति को शीश झुकाकर। करते हैं सम्मान दयानन्द॥
बनी विदूषी ललनाएँ भी। दूर किया अज्ञान दयानन्द॥
दानव-दल के दर्ल बल छ्र्ल का। तोड़ दिया अभिमान दयानन्द॥
तप करुणा के शुभ सौरभ का। पावन है उद्यान दयानन्द॥

बालकों के लिये

देश जगायें

बच्चो आओ। कदम बढ़ाओ॥
देश जगायें। मिलकर गायें॥
कष्ट उठाओ। मत घबराओ॥
धीरज धारो। आओ प्यारो॥
विद्या पाएँ। सब मुसकाएँ॥
सबल बनो तुम। सफल बनो तुम॥

नन्हे बाल

हम भारत के नन्हे बाल।
हम जननी के गौरव भाल॥
हम प्रताप हैं, हमीं शिवाजी।
हमीं राम हैं, हमीं गोपाल॥
हममें नलवा वीर वैरागी।
हम हैं, लाल, बाल व पाल॥
हम ज़ननी की आशा ज्योति।
हमसे भारत माला माल॥
सुनो! नहीं हम चलने देंगे।
अरिदल की अब चाल कुचाल॥
परहित वार सकें जो सब कुछ।
हम स्वदेश के ऐसे लाल॥
पद्मनियों की आस हमीं हैं।
हमसे काँपे काल कराल॥

जय बोलो वैदिक धर्म की

ईश का विधान है, ज्ञान की यह खान है, पुण्य का यह प्राण है।
जय बोलो वैदिक धर्म की।
भीरुता भगाएँगे, तेज बल दिखाएँगे, क्या हैं हम बताएँगे।
जय बोलो वैदिक धर्म की।
मन में यह अरमान हो, सबका आदर मान हो, ऋषियों की सन्तान हो।
जय बोलो वैदिक धर्म की।
मन में सबसे प्यार हो, आर्य यह संसार हो, सबका बेड़ा पार हो।
जय बोलो वैदिक धर्म की।
दूर दुराचार हो, नष्ट भ्रष्टाचार हो, सबके शुद्ध विचार हों।
जय बोलो वैदिक धर्म की।
टक्कर लो अन्यायी से, अत्याचार बुराई से, बढ़ो भिड़ो कुल्टाई से।
जय बोलो वैदिक धर्म की।
पतितों का उद्धार हो, जीवन वेदानुसार हो, मंगलमय संसार हो।
जय बोलो वैदिक धर्म की।

बाल गीत

जय जय गाओ

मिलकर आओ कदम बढ़ाओ, माँ भारत की जय जय गाओ।
आँधी आए सङ्कट आएँ, हों चाहे घनघोर घटाएँ॥
विपदाओं में भी मुस्काओ...
साहस धीरज उर में धारो, जननी के सब कष्ट निवारो।
दानव दल को दलते जाओ...
हिम्मत करके विश्व हिला दो, धरती के दुर्भाव मिटा दो॥
जो कहते हो कर दिखलाओ...
अरिदल के आगे न झुकना, मञ्ज़िल तक मग में न रुकना॥
निर्भय होकर चलते. जाओ...

जीवन मरण

हमें प्यारो प्यारा ऋषि का मिशन है।
यही आन अपनी व जीवन मरण है॥
कदापि इसे हम नहीं भूल सकते।
इसी प्राण धन के लिए अपना तन है॥...
बिना इसके संसार नीरस है लगता।
यह सर्वस्व अपना यह आशा पवन है॥...
सहेंगे सभी कष्ट इसके लिए हम।
दिखाएँगे हम, हममें कैसी लगन है॥...
पदों के प्रलोभन नहीं जानता वह।
जो कर्त्तव्य पालन में रहता मगन है॥...
वह बेचैन है चैन पाता इसी में।
लगी जिस किसी को भी इसकी लगन है॥...
उजाड़ो न ए! लीडरो वाटिका यह।
डरो ईश से यह भयङ्कर पतन है॥...

ऐसा कभी वतन होता था

किन शब्दों में आज बतावें, धरा धाम पावन होता था।
भोले भाले लोग थे बसते, सीधा सरल चलन होता था॥
सब जन जानें इस धरती का, खानपान पुष्टिकारक था।
मानो चाहे तुम न मानो, मीठा सुखद पवन होता था॥
दुर्बलताएँ थीं मानव में, यह भी है इतिहास बताता।
भले बुरे बसते थे जग में, इतना नहीं पतन होता था॥
दशों दिशाएँ सदा सुवासित, वेद ऋचाओं से होती थीं।
तन मन उन्नत हो जन जन का, ऐसा सदा जतन होता था॥
पेट कीट पक्षी भी भरते, धर्म सनातन यह होता था।
जातपात का रोग नहीं था, गुण का दमन नहीं होता था॥
प्रीति रीति-नीति अपनी, मीत वही सर्वेश्वर था।
स्वाहा स्वाहा जब होता था, दूषित नहीं गगन होता था॥
निर्मल थी यमुना की धारा, गङ्गा मैय्या का जल मीठा।
अनुप्राणित था हिमगिरि करता, सुख सञ्चारक वन होता था॥
राम वनों में यज्ञ रचाते, सीता माता सन्ध्या करतीं।
हो हल्ला सुन लो जगराता, ऐसा कहाँ जपन होता था?
बाल वृद्ध हँसते बसते थे, टाटा-टाटा कहाँ कहीं था?
मिलकर प्राणी सब रहते थे, घर घर यज्ञ हवन होता था॥
बहु बेटे को देख देखकर, नाच उठता था मन बुढ़िया का।
झुक झुक नमन किया करते थे, ऐसा मधुर मिलन होता था॥
करबद्ध होकर शीश झुकाते, मन मिलते थे दिल खिलते थे।
कोमल शब्द नमस्ते कहते, ऐसा अभिवादन होता था॥
कपटी से सब दूर भागते, मुनि गुणी का पूजन होता।
दुर्भावों से बचना चाहिए, नित्य यही चिन्तन होता था।
तङ्ग-तङ्ग गलियाँ होती थीं, उर आँगन थे खुले-खुले।
लोटे भर-भर दूध के पीते, घर घर में गोधन होता था॥
जब सोना हो तब ये जागें, जब जगना हो तब ये सोयें।
ऐसा जीवन कौन बिताता, ऐसा कहाँ मरण होता था?
कौन सीखने सुननेवाला, क्या सुधरेंगे भटके लोग?
व्यथा कथा मैंने तो कह दी, ऐसा कभी वतन होता था॥

गरिमामय जीवन

धर्म कर्म से अर्जित धन से पोषित होता था परिवार।
दुर्गम पथ था पर सीधा था, चलना नहीं कठिन होता था॥
विश्व-नियामक न्यायकारी, ओतप्रोत कण-कण में जो है।
मन मन्दिर में सायं प्रातः, उसका गुण वर्णन होता था॥
कर्महीन की दस्यु संज्ञा, पापलीन को पतित मानते।
सदाचरण से गौरव होता, ऐसा कभी गठन होता था॥
लक्ष्य हमारा सदा उच्च था, यत्न हमारे बड़े शुद्ध थे।
साध्य सिद्धि के लिए हमारा, ऐसा ही साधन होता था॥
सोचें देखें सभी पेट से, इनकी आँखें खोले कौन?
गौरव मिला उन्हीं को, जिनका वेदानुसार मनन होता था॥
पर पीड़ा को हरते जाना, दुखियों के दुःखों में दहना।
आश्रम धर्म निभाते जाना, अपना यही तपन होता था॥

जे सुख पाना जे

पढ़ लौ वेद दी वाणी जे सुख पाना जे
कदी कुराहे जायो न। हीरा जनम गँवायो न॥
ए कैहिन्दे जोगी ध्यानी जे सुख पाना जे.....
देह अपनी बलवान बनाईए। ईश्वर दे विच ध्यान लगाईए॥
ऐहो रीत पुरानी जे सुख पाना जे.....
फल करमाँ दा टलदा नाहीं। रैई ओ ईश्वर करदा नाहीं।
ए कर लो याद जबानी जे सुख पाना जे.....
बल धन दा हङ्कार न करिये। कदी न झूठी गल ते अड़िये॥
ए सिखया कल्याणी जे सुख पाना जे.....
भूत बडावे जिन ते डैन। जादू टूने मढ़ी मसान॥
छड्डो सब मनमानी जे सुख पाना जे।
पढ़ लो वेद दी वाणी जे सुख पाना जे॥

पञ्जाबी गीत

मिथ्या कौन बतावे

मिथ्या कौन बतावे, रचना ईश्वर दी।
मन मेरे नू भावे, रचना ईश्वर दी॥
बदल काले गजदे वसदे।
नदियाँ नाले भजदे नसदे॥
सुन्दर पुष्प खिलावे, रचना ईश्वर दी...
सोहने पर्वत उच्चे टीले।
जल बिन देखो थल रेतीले॥
उत्तों जल वर्षावे, रचना ईश्वर दी...
सत्कर्मी जोगी ते ध्यानी।
पढ़े सुने वेदां दी बाणी॥
ओह नर मुक्ति पावे, रचना ईश्वर दी...
पानी विच उस अग लुकाई।
बदलां विच बिजली चमकाई॥
अद्‌भुत खेल वखावे, रचना ईश्वर दी...
बिन अक्खां सूरज बे लोड़ा।
किंज दूरी तो रिशता जोड़ा॥
भेद न कोई पावे, रचना ईश्वर दी...
जिन सागर तिन सूरज रचया।
निजसां नल सृष्टि नूं सजया॥
सिरजनहार कहावे, रचना ईश्वर दी।
मिथ्या कौन बतावे, रचना ईश्वर दी॥

हमने ध्येय धाम विसार दिया

नर जीवन पाकर के जग में हमने ध्येय धाम विसार दिया।
फँस गये धँस गये हम विषयों में पर प्रीतम से न प्यार किया॥
कुछ अटक गये कुछ भटक गये मनमानी रीत चलाकर के।
दुःख पाते हैं और पाएँगे हम वेद व ईश भुलाकर के॥
क्यों आए थे क्या करना है हमने न सोच-विचार किया...
ईश्वर ने हमें बनाया है हम ईश्वर रोज बनाते हैं।
पत्थर का ईश बना करके उसका उपहास उड़ाते हैं॥
हर कङ्कर शङ्कर मान लिया उल्टा जग में व्यवहार किया...
परिवार हमारे बिगड़ गये आहार हमारा बिगड़ गया।
सन्तान हमारी बिगड़ गई आचार हमारा बिगड़ गया॥
शिक्षा बिगड़ी हम भी बिगड़े बिगड़ी का ही विस्तार किया...
जो बनते ईश उपासक हम वेदों की शिक्षा पर चलते।
दिन रैन जागते हम रहते दानव दल हमको न दलते।
न मानी देव दयानन्द की दुष्टों का न संहार किया...
जो तड़प उठें जन पीड़ा से वह सच्चा मुनि मनस्वी है।
जो राख रमाकर आग तपे वह भी क्या खाक तपस्वी है॥
जड़ पूजा कर निस्तेज हुए ईश्वर का न आधार लिया।
फँस गए धँस गए हम विषयों में पर प्रीतम से न प्यार किया...

जग के सिरजनहारे

तर्ज— भारत का कर गया बेड़ा पार वह मस्ताना जोगी।
जीवन की नौका कर दो पार जग के सिरजनहारे।
श्रद्धा की सुन्दर दो पतवार मेरे प्रीतम प्यारे॥
मन से दुर्भाव भगा दो, सोय सद्भाव जगा दो॥
सुखमय हो तेरा यह संसार जग के सिरजनहारे...
पढ़ते हैं ज्ञानी ध्यांनी, तेरी जो अमृतवाणी।
चख लूँ मैं वेदों की रसधार जग के सिरजनहारे...
साहस व शक्ति देना, भक्ति अनुरक्ति देना।
धीरज का दे दो जी भण्डार, जग के सिरजनहारे...
कष्टों में न घबराऊँ, सुविधा में न इतराऊँ।
आशा का नित्य करो सञ्चार, जग के सिरजनहारे...
सन्ध्या दो काल करूँ मैं, पापों से सदा भिड़ूँ मैं।
भूलों का करता रहूँ सुधार, जग के सिरजनहारे...
परहित कुछ करना सीखूँ, सत्पथ पर अड़ना सीखूँ।
सुनिये यह मेरी विनय पुकार, जग के सिरजनहारे...
आशा विश्वास देना, मन में उल्लास देना।
भर दो नस-नस में अमृतधार, जग के सिरजनहारे...
जीवन की नौका कर दो पार जग के सिरजनहारे।
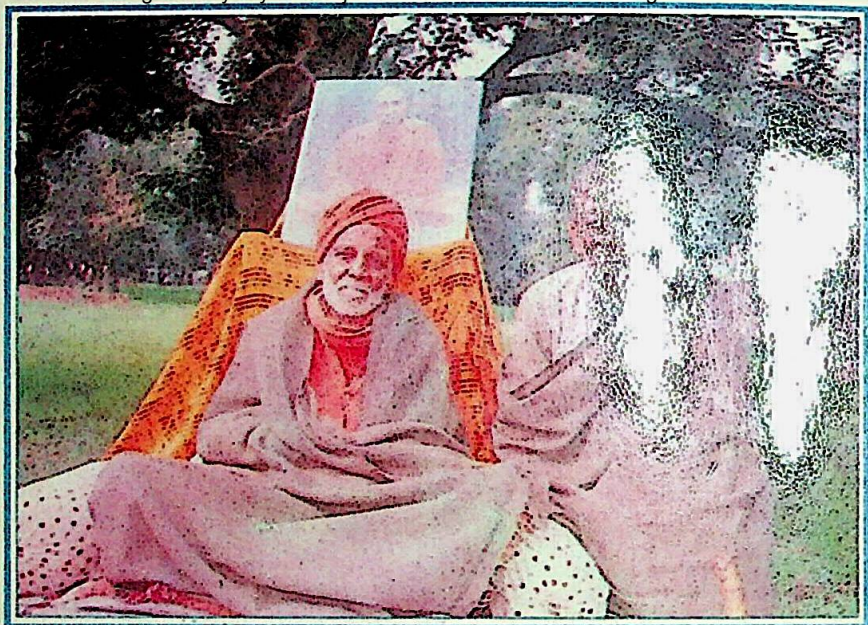
दयानन्द मठ, दीनानगर में पूज्य स्वामी श्री सर्वानन्दजी
के साथ प्राध्यापक राजेन्द्रजी 'जिज्ञासु'